संपादक मण्डल

संरक्षक / प्राचार्य

डॉ. अविनाश कुमार लाल

संपादक

डॉ. डी.पी. चन्द्रवंशी

सदस्य

डॉ. मुकेश त्यागी

श्री शिवराम सिंह श्याम

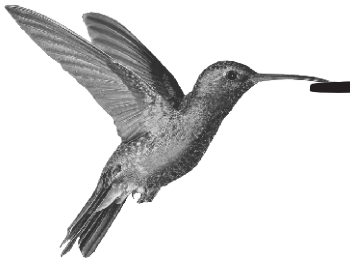

स्पंदन

(तृतीय संस्करण)

सत्र : 2019 - 20

''इसमें प्रतिभाओं को हंसते - गाते पाया
होकर अभिव्यक्त भावों को मुस्काते पाया

'स्पंदन' है ये इस महाविद्यालय के हृदय का
इसमें संवेदना को अपना हाल सुनाते पाया''

:: प्रकाशक ::

अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय

पाण्डातराई, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

Website : govtnaveencollegepandatarai.in, Email : pandataraigovtcollege3@gmail.com

मुक्ति के क्षणों में

बेनकाब चेहरे हैं, दाग बड़े गहरे हैं,
टूटता तिलिस्म आज, सच से भय खाता हूँ,
गीत नहीं गाता हूँ।

लगी कुछ ऐसी नजर, बिखरा शीशे से शहर,
अपनों के मेले में, मीत नहीं पाता हूँ,
गीत नहीं गाता हूँ।

पीठ में छुरी सा चाँद, राहु गया रेख फांद,
मुक्ति क्षणों में बार - बार बंध जाता हूँ
गीत नहीं गाता हूँ।

- स्व. श्री अटल बिहारी बाजपेयी
(भारत रत्न)

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्र.	क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्र.
01.	विभागीय प्रतिवेदन राष्ट्रीय सेवा योजना	01	26.	सफलता का मूलमंत्र	22
02.	विभागीय प्रतिवेदन वाणिज्य संकाय	01	27.	सिर्फ दस खरब पेड़ चाहिए	23
03.	राष्ट्र निर्माण	03	28.	वक्त का बदलना, बेटियाँ	24
04.	शिक्षा	04	29.	संतुष्टि	25
05.	बेदर्द जमाना, बचपन का जमाना	05	30.	जीवन का सत्य	26
06.	मेरी सुंदर बेटिया	06	31.	गंगा बहाव गीत	26
07.	ये बंधन है कुछ अनोखा	06	32.	सुविचार	27
08	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	07	33.	सफलता	27
09.	दोस्त, फर्क नही पड़ता	08	34.	सफलता की सीढ़ी का रास्ता	28
10	घर - परिवार, संविधान, हौसला	09	35.	कोयले का टुकड़ा	29
11.	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के		36.	घुट-घुटकर जीना छोड़ दें	30
	अनमोल वचन	10	37.	सादा जीवन उच्च विचार	30
12.	छत्तीसगढ़ी कविता	10	38.	तू मानव है.., मेरे जीवन का लक्ष्य	31
13.	Always Feeling Good	11	39.	ज्ञान-ध्यान-भक्ति-कर्म, आजाद की दृढ़ता	32
14.	लक्ष्य, इक पंक्षी देखा था मैंने	12	40.	हौसला बुलंद कर, एक कविता, समय का	33
15.	आत्मविश्वास	12	41.	भारतीय नारी	34
16.	परिश्रम का महत्व	13	42.	जीत पक्की	35
17.	मातृ देवो भव पितृ देवो भव	13	43.	आर्ट्स के क्षेत्र मे उड़ान	36
18.	आइये एक दीप ऐसा जलाये	14	44.	पिंजरे का जीवन, मेरी अभिलाषा है...	37
19.	जीवन की सच्चाई	15	45.	समय का नियम	38
20.	जीवन का अर्थ और उद्देश्य	16	46.	विद्या की देवी माँ सरस्वती	40
21.	Dream or Ambition		47.	अपने देश के प्रति हमार कर्तव्य	41
	जिन्दगी की सच्चाई	17	48.	छत्तीसगढ़ी दोहा	42
22.	कदम मिलाकर चलना होगा	18	49.	सफलता	43
23.	अहिंसा	19	50.	एक बचपन का जमाना था	44
24.	कन्या भ्रूण हत्या का कारण	20	51.	हमर कतका सुन्दर गांव	44
25.	साइबर क्राइम	21	52.	तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन तुम्हारे	44

सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल छत्तीसगढ़

सत्यमेव जयते

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़, भारत
फोन : +91-771-2331100
फोन : +91-771-2331105
फैक्स : +91-771-2331108

....संदेश....

मुझे जानकार बड़ी प्रसन्नता हुई कि अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय, पाण्डातराई, जिला - कबीरधाम द्वारा वार्षिक पत्रिका "स्पंदन" का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों के साहित्यिक एवं बौद्धिक स्तर को बढ़ाने,शिक्षण प्रणाली को रोचक और ज्ञानवर्धक बनाने तथा विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में महाविद्यालयीन पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान होता है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक गतिविधियों को उपयुक्त मंच प्रदान करेगी।

पत्रिका "स्पंदन" के प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(सुश्री अनुसुईया उइके)

डॉ. अरूणा पल्टा
कुलपति

Dr. Aruna Palta
Vice Chancellor
Office : 0788-2359800

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय
रायपुर नाका, दुर्ग (छ.ग.) 491001

HEMCHAND YADAV VISHWAVIDYALAYA
RAIPUR NAKA, DURG (C.G.) 491001
E-Mail : vicechancellor@durguniversity.ac.in

शुभकामना संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि अटल बिहारी बाजपेयी शासकीय महाविद्यालय पाण्डातराई द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका "**स्पंदन**" का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका से महाविद्यालय के विद्यार्थियों को सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सहित विविध विषयों पर समसामयिक लेखन का अवसर मिलेगा। साथ ही मैं उम्मीद करती हूँ कि इस पत्रिका के द्वारा छात्र-छात्राओं को अभिव्यक्ति एवं कौशल निखारने का एक सार्थक मंच मिलेगा। पत्रिका से महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों और विशेषताओं की जानकारियॉ भी लोगों तक पहूँचती है।

वार्षिक पत्रिका "**स्पंदन**" के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ !

(डॉ. अरूणा पल्टा)

श्रीमती ममता चंद्राकर
विधायक
विधान सभा क्षेत्र क्र. 71, पण्डरिया
कबीरधाम (छ.ग.)

कार्यालय
हॉलीक्रास स्कूल के पीछे,
नन्दी विहार कॉलोनी, कवर्धा (कबीरधाम)
मोबाइल : 9893637637 (निवास)
पण्डरिया कार्यालय
मैनपुरा रोड, पण्डरिया
मोबाइल : 9406064043

....संदेश....

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता है कि नगर पंचायत पाण्डातराई में संचालित अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय पाण्डातराई, जिला - कबीरधाम द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका "स्पंदन" का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि महाविद्यालीयन विद्यार्थियों के साहित्यिक, बौद्धिक एवं रचनात्मक स्तर को बढ़ाने तथा शैक्षिक प्रणाली को रोचक, ज्ञानवर्धक व उपयोगी बनाने एवं विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास में महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान होगा। निश्चित ही यह पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक गतिविधियों को उपयुक्त मंच प्रदान करेगी।

महाविद्यालय पत्रिका "स्पंदन" के प्रकाशन पर महाविद्यालय परिवार, अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय पाण्डातराई, जिला - कबीरधाम को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(श्रीमती ममता चंद्राकर)
विधायक - पण्डरिया

फिरोज खान
अध्यक्ष
नगर पंचायत पाण्डातराई

पता : वार्ड नं. 01,
करपात्री वार्ड, पाण्डातराई
जिला - कबीरधाम (छ.ग.)

.....शुभकामना संदेश.....

अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय की पत्रिका के तृतीय संस्करण के प्रकाशन में मैं नगर पंचायत अध्यक्ष होने के नाते पूरे पाण्डातराई नगर वासियों की ओर से महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादक मण्डल व पूरे स्टॉफ तथा नगर व आसपास के सभी प्यारे छात्र - छात्राओं को शुभकामनाएँ और बधाई देता हूँ। भविष्य में महाविद्यालय ऐसे ही कला, अध्ययन, क्रीडा, कैरियर उत्थान, समाज सेवा के क्षेत्र में उन्नति करता जाये।

मैं अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय की उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

फिरोज खान
अध्यक्ष
नगर पंचायत, पाण्डातराई

श्रीमती ममता गुप्ता
अध्यक्ष - जनभागीदारी समिति
अटल बिहारी वाजपेयी शास. महाविद्यालय
पाण्डातराई

पता :
नगर पंचायत - पाण्डातराई
जिला - कबीरधाम (छ.ग.)

.....शुभकामना संदेश.....

चरित्र निर्माण शिक्षा के बिना असंभव है, शिक्षा ही है जो संपूर्ण विश्व को परिवर्तित कर सकता है। शिक्षा के द्वारा ही बच्चों की बुद्धि का तीव्र विकास होता है। जिससे उनके चारित्रिक एवं नैतिक गुणों का विकास संभव हो पाता है। इन सभी में हमारे नगर पंचायत पाण्डातराई का अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय का अपना अलग ही स्थान है। जहां के विद्यार्थियों एवं अध्यापको ने नगर ही नही पूरे प्रदेश में अपनी अलग ही पहचान बना रखी है। जिसके लिए मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहती हूँ। साथ ही साथ उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

श्रीमती ममता गुप्ता
अध्यक्ष
जनभागीदारी समिति

प्राचार्य की लेखनी से...

दोस्तो,

व्यर्थ की चिन्ता, स्टेटस को बनाये रखने की जुगत, दिखावा, बच्चों को अकारण बोझ में डालना, बेमतलब् का टेन्शन लेना और देना, अपने कलिग से जलस रखना, अपने कार्य को अहमियत नही देना और दुसरे के काम में अड़चन डालना, चमचाई की हद को अपने स्वार्थ के लिये पार करना, अपनी योगता को सर्वपरि मानना ये सब स्लो पायजन है, मेरे दोस्त इससे बच सको तो बचो नही तो तुम्हारे शरीर के साथ साथ परिवार को भी नासूर बन कर सड़ा देगा....

उठो... जागो....आगे आओं....

देश सो रहा है, खास कर युवा ऊंघ रहा है,

उसे खुमारी है, नशे की, आलसता की, विलासिता की,

उसे लत है, मोबाईल की, गासिप की, ऐसे रिश्ते जो बरबादी को लाता है, बनाने की कोशिश करना..... इनसे बचो....

जबकि युवा का मतलब होता है,

जिसके पैर में गति

जिसके सोच में ताजगी

जिसके हाथों में कला

जिसके बात में दम

जिसके व्यवहार में नम्रता

जिसके नींद में बेहतरी के सपने

जिसके जागने में विकास (खुद के साथ साथ देश का भी)

पर पर पर हमारे युवाओं को हुआ क्या... ?

क्यों सो रहे हो

दुसरों के लिए नही तो स्वयं के लिये तो जागो....

इस लिये उक्त सब बातो को सच्चे मन से ईश्वर के सामने मान लो, क्यांकि हमें केवल हम या ईश्वर ही जानता है,

और खुद को जांचो तथा सारी व्यर्थ की चिन्ता भी उस (ईश्वर) पर डाल दो फिर देखो कैसे बिना माथे में शिकन बिना तुम्हारा जीवन स्थाई खुशियों से भरा होगा...

शुभ आशीर्वाद

सफल हो

आगे बढ़ो

निरंतर गति बनी रहे

ऊंचाईयों को

कठिनाईयों को

लांघ जाओ....

प्रो. अविनाश कुमार लाल

संपादकीय...

यह बात अनुभव सिद्ध है कि मेहनत/प्रयास कभी व्यर्थ नही जाता है। आज विश्व में जो भी व्यक्ति सफल हुए हैं, वे बिना सतत प्रयास के नही हुए हैं। सफलता प्राप्त करने के लिए सतत परिश्रम की आवश्यकता है, क्योंकि उच्च सफलता कभी शार्ट कट रास्ते से नही मिलती। बड़े - बड़े प्रशासनिक पदाधारियों के साक्षात्कार पढ़ने से यही बात स्पष्ट होती है, कि बड़ी उपलब्धि कभी छोटे रास्ते से नही आती। उच्चतम सफलता के लिए मेहनत का कोई दूसरा विकल्प है ही नहीं।

अभी के इस कोविड - 19 के दौर में महाविद्यालय के कई छात्र/छात्रायें मुझे दूरभाष पर पूछते है कि ''परीक्षा होगी कि नहीं'' इस पर उन्हें मेरा जवाब यही रहता है कि परीक्षा हो या न हो आप अपनी पढ़ाई करते रहिए, क्योंकि परिश्रम कभी जाया नहीं होती।

इस बात को मैं एक सत्य घटना के माध्यम से सिद्ध करना चाहूँगा, जब छ.ग. लोकसेवा आयोग ने 2009 में प्रथम सहा. प्राध्यापक भर्ती की परीक्षा की तिथि घोषित की, तो कई योग्य अभ्यर्थियों द्वारा इस संबंध में अलग-अलग राय व्यक्त किये गए। कई तो परीक्षा की तैयारी में लग गए और कई अभ्यर्थी इस बात का भ्रम फैलाते रहे कि परीक्षा रद्द हो जाएगी, क्योंकि मामला न्यायालय चला गया है। एक महानुभाव तो लोगों को फोन कर-कर के बताते रहे कि यह परीक्षा होगी ही नही, परीक्षा के एक दिन पहले ही कोर्ट से स्थगन आ जायेगा। कोई नही तो मैं स्वयं स्थगन लेकर आऊँगा, क्योंकि ये परीक्षा नियम विरूद्ध है तथा तत्कालीन संविदा सहा. प्राध्यापकों को ही नियमित नियुक्ति मिलने वाली है। वह अपनी बात को कई तार्किक ढंग से प्रस्तुत करते, जिससे एक बार में विश्वास भी हो जाए। उनकी इन बातों का असर बहुत से योग्य अभ्यर्थियों पर हुआ भी। जिन्हें इनकी बातों का असर हुआ वे अपनी तैयारी रोक कर इसी जुगत मे रहे कि जल्दी परीक्षा रद्द होने की सूचना मिलने ही वाली है, क्योंकि इस बात को लेकर कुछ लोग कोर्ट जा चुके थे, वे भी भ्रम फैला रहे थे। कुछ योग्य अभ्यर्थी मित्रों ने मुझसे भी सलाह ली तो मैंने उन्हें यहीं कहा कि तैयारी करते रहिये, क्योंकि तैयारी कभी व्यर्थ नही जायेगी, आज नहीं तो कल काम आयेगी ही। कुछ ने तैयारी नही छोड़ी, कुछ ने मन मारकर तैयारी की और कुछ ने उन भ्रमित करने वालो के भ्रांत तर्क से प्रभावित होकर तैयारी छोड़ दी। परीक्षा अपने नियत समय पर हुई, कोई स्थगन नही आया। तैयारी करने वाले - चाहे वह मन मारकर ही क्यों न तैयारी की हो, प्रश्न पत्र अच्छे ढंग से हल किये व भ्रम पाले योग्य अभ्यर्थी अच्छा हल नही कर पाए व परिणाम आने पर असफल होकर सर धुन-धुन कर पछतायें। कुछ सफल मित्रों का फोन मेरे पास इस बात का धन्यवाद देने के लिए आया कि मैंने उन्हें तैयारी के व्यर्थ न जाने की बात कहीं थी। प्रत्यक्ष प्रमाण उनकी सफलता से मिला।

यह घटना सबके लिए सीख है कि तैयारी व्यर्थ नहीं जाती आज नहीं तो कल वह ज्ञान अवचेतन मन में संचित रहकर काम आता ही है। एक बात और सबने अनुभव किया होगा कि एकाध अपवाद को छोड़ दे तो नियमित रूप से विद्यालय या महाविद्यालय की कक्षा में उपस्थित रहने वाला विद्यार्थी ही ज्यादा अंक प्राप्त करता है व अनियमित आने वाला या स्वाध्यायी विद्यार्थी उससे पीछे रह जाता है, क्योंकि कक्षा की बहुतायत पढ़ाई दृष्य-श्रव्य होती है। श्याम पट पर लिखकर पढ़ाए जाने से नेत्र उसका प्रति बिम्ब अवचेतन में अंकित कर लेता है व श्रवण अंग भी सुनी हुई बातों को ऐसा ही करता है। वही कक्षा का ज्ञान परीक्षा के समय ऐन वक्त पर याद आ जाता है और प्रश्न पत्र अच्छे ढ़ंग से हल हो जाता है, अर्थात यहां भी सिद्ध होता है कि परिश्रम व्यर्थ नही जाता वक्त पर काम आता ही है। ऐसा एक नहीं असंख्य उदाहरण और घटनाएं है जो परिश्रम की उपयोगिता सिद्ध करती है और मेहनत करते रहने का संदेश देती है, जो इनसे जीत लेता है, वह सुख व आनंद का भागी होता है और सीख नहीं लेने वाला कष्ट पाता है।

- डॉ. द्वारिका प्रसाद चंद्रवंशी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

महाविद्यालय परिवार

डॉ. अविनाश कुमार लाल

प्राचार्य एवं संरक्षक

- राजनीति विज्ञान विभाग
  डॉ. अविनाश कुमार लाल
- हिन्दी विभाग
  डॉ. डी.पी. चंद्रवंशी
  श्री बुद्धदेव सिंगरौल (अतिथि व्याख्याता)
- रसायन शास्त्र विभाग
  डॉ. मुकेश त्यागी
  श्री शक्ति सिंह खरे (अतिथि व्याख्याता)
- वाणिज्य विभाग
  श्री शिवराम सिंह श्याम
  श्रीमती पूर्वा गुप्ता (अतिथि व्याख्याता)
- अंग्रेजी विभाग
  श्री सूरज कुमार ओगरे (अतिथि व्याख्याता)
- इतिहास विभाग
  श्रीमती संगीता चंद्रवंशी (अतिथि व्याख्याता)
- जन्तु विज्ञान विभाग
  श्री लव कुमार वर्मा (अतिथि व्याख्याता)
- वनस्पति विज्ञान विभाग
  सुश्री कामिनी वर्मा (अतिथि व्याख्याता)
- समाज शास्त्र
  सुश्री सीमा चंद्रवंशी (अतिथि व्याख्याता)
  श्री बिक्की राम (अतिथि व्याख्याता)

- **श्री रामचन्द्र कुम्भकार**
  सहायक ग्रेड - 03
- **श्री दीपक कुमार गुप्ता**
  प्रयोगशाला तकनीशियन
- **श्री संतोष कुमार साहू**
  प्रयोगशाला परिचारक
- **श्री अभिषेक गुप्ता**
  प्रयोगशाला परिचारक
- **श्री दिनेश कुमार राज**
  भृत्य
- **श्री विनय कुमार शर्मा**
  भृत्य
- **श्री लुकमान खान**
  कम्प्यूटर ऑपरेटर (जनभागीदारी)
- **श्री सुखचैन ध्रुव**
  फर्रास (जनभागीदारी)
- **श्री जीतराम चंद्रवंशी**
  चौकीदार (जनभागीदारी)

विभागीय प्रतिवेदन
राष्ट्रीय सेवा योजना

अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय, पाण्डातराई में. रा.से.यो. की इकाई 2017 से अस्तित्व में आई है। महाविद्यालय को 50 स्वयं सेवको की एक इकाई आबंटित हुई है। महाविद्यालय के सेवाभावी विद्यार्थी इसमें जुड़े है और सारे नियमित एवं सप्तदिवसीय गतिविधि में भाग लेते है। महाविद्यालय के रा.से.यो. इकाई वि.वि. के सभी निर्देशों का पालन करती है। यह इकाई महाविद्यालय में हमारे महापुरूषों की जन्म एवं पूण्य तिथियों का सफलतम आयोजन करती है व महाविद्यालय की साफ – सफाई का भी विशेष ध्यान रखती है, साथ सरकारी योजनाओं के प्रचार – प्रसार में अपनी अलग भूमिका निभाती है। सन् 2018 में कु. प्रतिभा एवं पुष्पा निषाद ने रायपुर में आयोजित 7 दिवसीय योगाफेस्ट कार्यक्रम में अपनी सहभागिता देकर महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया तथा 2020 में तुषार चंद्रवंशी ने पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि., रायपुर में आयोजित स्वयं सेवकों के **डिजिटल प्रशिक्षण कार्यक्रम** में शामिल होकर महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। हमारे स्वयं सेवको द्वारा कोविड – 19 के संबंध में जानकारी प्रदान करने का अभियान चलाया गया, जिसके तहत सामाजिक दूरी रखने, मास्क लगाने व साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखने का अंचल में संदेश दिया गया। लगभग 400 मास्क स्वयं सेवकों ने स्वयं तैयार कर लोगों में बांटे साथ ही हाथ धोने के लिए साबुन का वितरण भी किया गया। कुछ चुनिंदा स्वयंसेवकों को कोविड – 19 की विकरालता को देखते हुए आपातकालीन सेवाओं के तहत प्रशासन को मदद करने के लिए तैयार भी किया गया है । जब भी प्रशासन सेवा कार्य के लिए आह्वान करेगा, स्वयं सेवक तुरंत सेवा कार्य में उपस्थिति हो जाएंगे। उक्त कार्य मेरे नेतृत्व एवं महाविद्यालय के अनुभवी प्राचार्य डॉ. ए.के.लाल के कुशल मार्गदर्शक में संपादित किये जा रहे है।

डॉ. डी.पी. चन्द्रवंशी
कार्यक्रम अधिकारी

विभागीय प्रतिवेदन
वाणिज्य संकाय

अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय, पाण्डातराई में विगत 9 वर्षो से स्नातक स्तर पर वाणिज्य संकाय संचालित है। शुरूवाती दौर में प्रवेशित विद्यार्थियों की संख्या कम रही है, लेकिन समय के साथ धीरे–धीरे प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में इजाफा हुआ है। इस महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय में 60 सीट उपलब्ध है।

छात्र – छात्राओं के बीच कॉमर्स का क्रेज बढ़ा है। विश्व स्तर पर ग्लोबलाइजेशन के बाद इस विषय की डिमांड बढ़ी है। कॉमर्स के छात्र स्वरोजगार के साथ विभिन्न क्षेत्रों में कैरियर बना सकते है। वित्तीय संस्थानों में कॉमर्स के छात्र–छात्राओं को ही प्राथमिकता मिलती है। कॉमर्स की डिग्री लेकर सी.ए. या मैनेजमेंट करने वाले कंपनियों का लेखा – जोखा रखते है। अब प्रतियोगिता परीक्षाओं में भी कॉमर्स विषय की उपयोगिता बढ़ गई है। इस प्रकार विद्यार्थी वाणिज्य संकाय के महत्व को देखते हुए इसमें प्रवेश लेकर अपना सुनहरा भविष्य बना सकते है। इस महाविद्यालय के प्रवेशित छात्र–छात्रा प्रत्येक वर्ष अच्छे अंको के साथ उत्तीर्ण होते रहे है। वर्तमान में वाणिजय संकाय की परीक्षा परिणाम और बेहतर होता जा रहा है।

शिवराम सिंह श्याम
सहायक प्राध्यपक (वाणिज्य)

राष्ट्र निर्माण....

ना सरकार मेरा है ना रब मेरा है और ना ही बड़ा सा नाम मेरा है बस इतनी सी बात है का गुरूर है मुझे कि मैं भारत का हूँ, और ये भारत मेरा है।

परन्तु एक वैचारिक बीमारी हमारे समाज में मुझे नजर आती है। कहा जाता है हमारा देश दुनिया सबसे बड़ा लोकतंत्र का देश है, जहां हिन्दू पैदा होते है, मुसलमान पैदा होते है, सिख और ईसाई भी पैदा होते है लेकिन बद किस्मती है अब इन्सान पैदा नहीं होते है और मेरे विचारो में हिन्दू की जरूरत है ना मुसलमान की और ना ही सिख ईसाई की जरूरत है। राष्ट निर्माण के लिए केवल अच्छे व सच्चे इंसान की जरूरत है। जरा सोचकर देखिये ये पेड़–पौधें भी और शाखाएं भी परेशान हो जाये अगर परिन्दे भी हिन्दू और मुसलमान हो जाये। एक शैक्षिक बीमारी भी मुझे हमारे समाज में नजर आती है, और बड़े ही आश्चर्य की बात है, जिस देश ने पूरी दुनिया को तक्षशिला और नालन्दा देकर के विश्व–विद्यालयी शिक्षा की बुनियाद रखा, आज विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ विश्व विद्यालयों में हमारे देश का एक भी विश्व विद्यालय शामिल नहीं हो पाता है। जहाँ एक ओर हमारे पास आई.टी.आई., आई.आई.एम. और एन.आई.टी. जैसे शिक्षण संस्थान है, तो वहीं दूसरी ओर इस देश के गरीबों को बेरोजगारी का जमात में खड़ा करने के लिए उनके हाथों में सर्व शिक्षा अभियान का झुनझुना पकड़ा दिया जाता है और मैं बता दूं कि उस शैक्षिक बीमारी का केवल एक कारण है, कि हमारे देश की शिक्षानीति केवल दो तरह के लोगों के लिए बनती है पहली पहले वो जो विद्वान है और दूसरे वो जो धनवान है । इसी तरह कई गजब की बीमारियों है और इन बीमारियों की जो जड़ है ना वो है हमारा अन्धविश्वास और मेरे विचारों में जब तक इस देश का युवा अपनी सफलता के लिए मंदिरों में जा–जाकर नारियल फोड़–फोड़कर भगवान को रिश्वत देता रहेगा, हमारे समाज का शिक्षित वर्ग ही बिल्ली के रास्ता काटने पर जब जब खड़ा होगा, अपने धर्म अपनी जाति को ऊँचा मानकर दूसरों के धर्म एवं जाति की अवहेलना करता रहेगा, तब तक ना तो इस देश से अंध विश्वास खत्म होगा और ना ही हमारा राष्ट्र निर्माण सम्भव होगा। हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार एवं हमारी सभ्यता की दुनिया ने शीश नवाया है तो क्यों आस्था के नाम पर हमने अन्धविश्वास फैलाया है।

मेरे विचारों में हमारा राष्ट्र निर्माण तब तक संभव नहीं होगा जब तक इस देश में महिलाओं की पूजा नहीं जाएगा, उनकी इज्जत किया जायेगा, राष्ट्र निर्माण तभी संभव होगा जब हम जाति के आरक्षण पर नही बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण पर बातें करेंगे, हमारा राष्ट्र निर्माण तब संभव होगा जब स्वच्छ और स्वस्थ भारत मिशन अभियान में केवल सरकार ही नहीं बल्कि सड़क पर चलने वाला हर एक नागरिक हाथ बटायेगा स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत का नारा को दिल से अपनायेगा। असल मायने में हमारा राष्ट्र निर्माण तब संभव होगा जब एक गरीब बच्चा सरकारी स्कूल में मध्यान्ह भोजन के लिए नहीं अपितु ज्ञान अर्जन के लिए उसके चौखट पर कदम रखेगा और हमारा राष्ट्र निर्माण तब तक संभव नहीं होगा जब तक एक नागरिक नैतिक रूप से प्रतित, चारित्रिक रूप से भ्रष्ट, मानसिक रूप से दिवालिया धार्मिक रूप से अंधा, राजनैतिक रूप से गंदा, स्वैच्छिक मान मूल्यों के आंकड़ो में छिन्न–छिन्न, विपन्न और अखण्ड भारत को खण्ड–खण्ड करता रहेगा। बड़ी–बड़ी बातें नहीं छोटी – छोटी कोशिशें करनी होगी, क्योंकि ठोकर हमें पहाड़ों से नहीं रास्तों पर चलने वाले पत्थरों से लगा करते हैं।

I being an Indian , I being a student, I being a simble doughter of this mother land few proud to be an Indian.

और में सम्मान करना चाहुँगा सरहद पर दिन–रात हमारी रक्षा के लिए तैनात हर उस जवान को, हमारे देश की पुलिस, प्रशासन, डॉक्टर और किसान को और हमारे देश के हर उस इन्सान को जो अपना काम पूरी ईमानदारी और लगन से करते है। जिनके बिना राष्ट्र निर्माण की कल्पना करना भी असंभव सा लगता है।

हमारा राष्ट्र निर्माण तब संभव होगा जब हम सब – आप और हम सब मिलकर प्रयास करेंगे क्योंकि हमारे देश को आगे ले जाने की हमारी जिम्मेदारी है ।

तो अंत में मैं बस इतना ही कहना चाहूँगा कि मेरा हिन्दुस्तान महान था, महान है और महान रहेगा। होगा हौसला बुलन्द सबके दिलों में तो एक दिन सारा जहान ''जय–हिन्द'' कहेगा क्योंकि सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा, हम बुलबुले है इसकी ये गुल्सिताँ हमारा।

जय हिन्द । जय भारत। ।। वन्दे मातरम् ।।

मन्नू राम
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

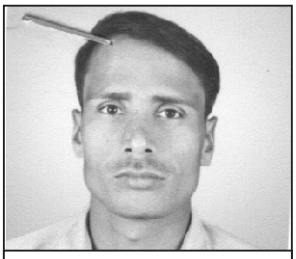

जीतराम चन्द्रवंशी
चौकीदार - जनभागीदारी

शिक्षा

हम सब लोग जानते है कि हमारे जीवन में शिक्षा का महत्व शुरू से ही रहा है। इसलिए हम सबको ऐसी शिक्षा प्राप्त करना चाहिए जिससे चरित्र का निर्माण हो, बुद्धि का विकास हो तथा मन की शक्ति बढ़े और मनुष्य शिक्षा प्राप्त कर अपने पैरो पर खड़ा हो सकें । जैसे शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के सामान है कहावत है अनपढ़ के लिए काला अक्षर भैंस बराबर। हमारे देश, प्रदेश में शिक्षा प्राप्त करने के लिए बहुत से स्कुल, कॉलेजों का निर्माण हो चुका है तथा सरकार की तरफ से अलग – अलग यूनिवर्सिटी का स्थापना भी की गई है ताकि उच्च शिक्षा प्राप्त किया जा सके। लेकिन आज कल चंद लोगों या पूंजीपति लोगों के द्वारा शिक्षा को व्यापार बना दिया गया है और आम आदमी शिक्षा से वंचित हो रहा है। पहले सिर्फ सरकारी स्कूल हुआ करता था इसमें गरीब, अमीर सभी शिक्षा प्राप्त करते थे, लेकिन आज पूंजीपतियों ने प्रायवेट स्कूल खोल रखा है जिसमें गरीब लोग नहीं पढ़ सकते। सरकारी स्कूल से शिक्षा प्राप्त कर हमारे पूर्व राष्ट्रपति महामहिम अब्दुल कलाम जी बहुत ही गरीब परिवार से थे जो अपने प्रयासों से आगे बढ़े और बहुत सारा अविष्कार किया तथा देश का नाम रोशन किया। यह सिर्फ शिक्षा का योगदान है शिक्षा के बगैर इंसान कुछ खास नहीं कर पाता। शिक्षा का महत्व सम्पूर्ण मानव के लिए आवश्यक है। लेकिन कुछ लोग शिक्षा प्राप्त कर सिर्फ नौकरी करना उद्देश्य रखते है, शिक्षा का मूल उद्देश्य नौकरी नहीं शिक्षित होना होता है ताकि शिक्षित होकर किसी भी क्षेत्र में उन्नति कर सकता है। इसलिए शिक्षा आजकल अनिवार्य आवश्यकताओं में शुमार हो गया है।

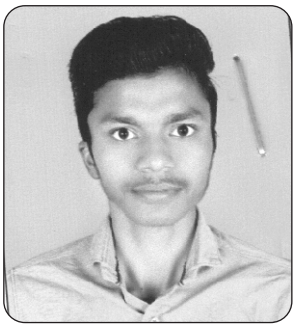

सूरज गुप्ता
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

''बेदर्द जमाना''

बाप के ना होने पर बच्चों की जिन्दगी
बन जाती है गाली।
शौहर के ना होने पर बीबी की जिन्दगी
बन जाती है काली।
आदमी के पास पैसा ना होने पर
जिन्दगी बन जाती है जाली।
इस बेदर्द जमाने में टिक नहीं सकती
जनता भोली–भाली।
ईमानदारी करने वाले को खानी पड़ती है
बंदूक की गोली
गरीब लोगों की लड़कियों की
मुश्किल से उठती है डोली।
जमाना ऐसा खराब आया है कि साली
बन बैठी है घरवाली।
यहाँ तो हर कोई बैठा है उतारने को
लाचार औरत की चोली।
इसलिये तो अब लगता है राम की
गंगा हो गयी मैली।
मौत का तांडव शुरू हुआ है, गुंड़े खेल
रहे है खून की होली।

दोस्त

काश मिलने की वजह मिल जाये
साथ जितना भी बिताया वो पल मिल जाये।
चलो अपनी–अपनी आँखें बंद कर ले,
क्या पता ख्वाबों में गुजरा हुआ कल मिल जाये।
मौसम को महका दे उसे इत्र कहते है,
जीवन को महका दे उसे मित्र कहते है।
क्यूँ मुश्किलों मे साथ देते है दोस्त,
क्यूँ गम को बाँट लेते है दोस्त।
न रिश्ता खून का न रिवाज से बंधा है,
फिर भी जिन्दगी भर साथ देते है दोस्त।

सुविचार

'नाम' और 'पहचान', भले ही छोटी हो।
मगर खुद की होनी चाहिए।
सभी का सम्मान करना, बहुत अच्छी बात है।
पर आत्म सम्मान के साथ जीना, खुद की पहचान है।

सुविचार

हमें मंजिल के रास्ते,
दूर से दिखाई नहीं देते है।
हमारे मंजिल के रास्ते,
तभी दिखाई देते है,
जब हम उसके करीब पहुँचते है।।

बचपन का जमाना

धर्मेन्द्र कुमार बघेल
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

अफसाना था, तराना था,
जो बीत गया,वो मेरे बचपन का जमाना था।

सोने–जागने की सुध नहीं, अपने धुन में खोये रहते थे।
पल में हंसना, पल में रोना, अपना ही एक नजराना था।
जो बीत गया,वो मेरे बचपन का जमाना था।

ना पढ़ने का कोई दबाव, ना कोई घर की चिन्ता,
बस इधर–उधर, आना–जाना था।
जो बीत गया,वो मेरे बचपन का जमाना था।

अब जवान हो गया हूँ, हर परेशानी से घिर गया हूँ।
पढ़ाई का बोझ सर–सर है, कमाने का दबाव है।
माँ–बाप की हालत देखकर, बढ़ जाता मन का भाव है।
कैसे चलाऊँगा घर सोचता हूँ कैसे है कमाना
मानसिक तनावों का कैसा है फसाना।
जो बीत गया,वो मेरे बचपन का जमाना था।

उम्मीद पे दुनिया कायम है,
बस यही रोज काम है, खुद को है सुनाना,
जो बीत गया,वो मेरे बचपन का जमाना था।

मेरी सुंदर बेटियाँ

दुर्गा का वरदान है बेटी
सरस्वती का ज्ञान है बेटी
भू–अम्बर की शान है बेटी
नासा की पहचान है बेटी
मेरे देश की शान है बेटी
मेरे गाँव की पहचान है बेटी
घर–आँगन की शान है बेटी
कुश्ती की पहचान है बेटी
माँ–बाप की शान है बेटी
बुढ़ापे का सहारा है बेटी

रामचन्द्र कुंभकार
सहायक ग्रेड-3

बिजली

जब तुम बिजली बचाते हो
खुशियां घर लाते हो
ज्यादा बिल से तुम बच पाते हो
हर दम झुम जाते हो
पहचानो बिजली का मोल
इसका है सबसे ज्यादा मोल
ये है हम सब के लिए अनमोल
ये है भविष्य के लिए अनमोल
जब बिजली को बचाएंगे
तभी भविष्य के लिए रख पायेंगे।
बिजली के बिना ना कोई साधन
इसके बिना खुद में ही खे जायेंगे
कूलर, पंखा, टीवी ना फ्रीज होंगे
जब तुम बिजली बचाते हो
खुशियां घर लाते हो।

ये बंधन है कुछ अनोखा सा

ये बंधन है कुछ अनोखा सा
कुछ कुछ खट्टा सा कुछ–कुछ मीठा सा
कभी छोटी, मोटी, पागल कहकर मुझे रींझाता
मैं रूठती और फिर वो बेटा कहके मुझे मनाता
कभी हंसाता कभी–कभी खूब रूलाता
मेरे सपनों को अपनी आँखों में वो सजाता
जब भी चलूँ किसी राह पर मैं
उन राहों का पहले वो मुआयना कर आता
बहन हूँ मैं पर बेटी सा वो लाड लगाता
कभी–कभी खूब प्यार तो
कभी–कभी हल्की फटकार भी लगाता
उदास होऊ जब भी मैं
आंखों से आंसू पहले उसके आता।
ये भाई–बहन का पवित्र बंधन तेरा आशीष है दाता।
खुश किस्मत है वो जो ये प्यार का बंधन है पाता।
ये बंधन है कुछ अनोखा सा...

शिवानी गुप्ता
एम.ए. हिन्दी

माँ

जो है सर्जक जो पालक है,
उस कान्हा की भी जननी तो मेरी माँ जैसी है
सृष्टि रचयिता सी माँ पे क्या बोलूं
वो मुख–कंठ कहाँ से लाऊं, सच में
माँ पे कुछ कहने की मेरी हैसियत नहीं
क्या कहूँ वही जो सब कहते है
माँ के अधरों के स्पंदन में एक गूँज है
उस गूँज को बयां करू, कैसे करूँ
कैसे बतलाऊँ उस जीवन को
वो शब्द कहाँ से लाऊँ, सच में
माँ पे लिखने की मेरी हैसियत नहीं
माँ और माँ की ममता क्या लिखूँ
नौ माह सारी वेदना सह
वक्ष की सरिता से जीवन दे
निर्मोही ममता की छाँव
वो अंकिचन हिम्मत
उन सहस्त्र आशीषों को कैसे व्यक्त करूँ, सच में
माँ को व्यक्त करने की मेरी हैसियत नहीं
माँ पे लिखने की मेरी हैसियत नहीं।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जन साधारण मे डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के रूप में जाने जाते है। वो भारतीय लोगों के दिलों में जनता के राष्ट्रपति और भारत के मिसाइल मेन के रूप में वो एक महान वैज्ञानिक थे जिन्होनें बहुत सारे अविष्कार किये। वो भारत के एक पूर्व राष्ट्रपति थे जिनका जन्म 15 अक्टूबर 1937 में हुआ था, इनका निधन 27 जुलाई 2015 में हुआ था । कलाम एक महान इंसान थे, जिन्हें भारत रत्न (1997 में), पद्म विभूषण (1990 में) पद्म भूषण (1987), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार (1997), रामानुजन अवार्ड (2000), किंग्स चार्ल्स द्वितीय मेडल (2007), इंटरनेशनलवोन करमान विग्स अवार्ड (2009) आदि से सम्मानित किया गया।

कलाम ने एक वैज्ञानिक के तौर पर डीआरडीओ (रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन) में कार्य किया जहाँ उन्होंने भारतीय सेना के लिए एक छोटा हेलिकॉप्टर डिजाइन किया। उन्होंने इन्कोस्पार कमेटी के एक भाग के रूप में विक्रमसाराभाई के अधीन भी कार्य किया। बाद में कलाम साहब भारत के पहले स्वदेशी अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन से जुड़ गये। भारत में बैलिस्टक मिसाइल के विकास के लिए दिये गये अपने महान योगदान के कारण वो हमेशा के लिए भारत के मिसाइल मेन के रूप में जाने जायेंगे । 1998 के सफल पोखरन द्वितीय परमाणु परीक्षण में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वो भारत के तीसरे राष्ट्रपति थे जिसे भारत रत्न से सम्मानित किया गया था (पहले डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को 1954 में, दूसरे डॉ. जाकिर हुसेन को 1963 में)। भारत सरकार में एक वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में साथ ही साथ इससे और डीआरडीडीओ में अपने योगदान के लिए 1981 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। डॉ. कलाम ने बहुत सारी किताबें लिखी जैसे विग्स ऑफ फायर, इग्नीइटेड माइन्ड्स, टारगेट्स 3 बिलियन इन 2011 टर्विमग फलाइट्स, इंडिया 2020 माई जर्नी आदि।

''इन्होंने भारत को एक विकसित देश बनाने का सपना देखा था जिसके लिए उन्होंने कहा कि''

आपके सपने के सच हो सकने के पहले आपको सपना देखना है।

एक वैमानिकी इंजीनियर होने के अपने सपने को पूरा करने के लिए जहाज में अपनी विशाल इच्छा पढ़ाई को नहीं रोका। डॉ. कलाम ने तिरूचिरापल्ली मे सेंट जोसेफ से विज्ञान मे ग्रेजुएशन और 1954 में मद्रास इंस्टीट्यूट से एयरो नॉटिक इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की । वो कहते थे कि राष्ट्र के नेतृत्व में आदर्श की जरूरत है जो युवाओं को प्रेरित कर सके।

पिता ...

विद्या साहू
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

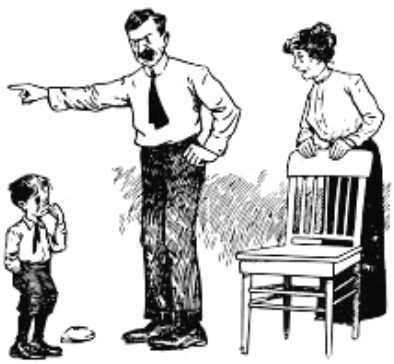

मेरा साहस मेरी इज्जत मेरा सम्मान है पिता।
मेरी ताकत मेरी पूँजी मेरी पहचान है पिता।।
घर के एक–एक ईंट में शामिल उनका खून–पसीना।
सारे घर की रौनक उनसे सारे घर की शान है पिता।।
मेरी इज्जत मेरी शोहरत मेरा रूतबा मेरा मान है पिता।
मुझको हिम्मत देने वाले मेरा अभिमान है पिता।।
सारे रिश्ते उनके दम से सारी बातें उनसे हैं।
सारे घर के दिल की घड़कन सारे घर की जान है पिता।।
शायद रब ने देकर भेजा फल ये अच्छे कर्मो का।
उसकी रहमत, उसकी नेमत, उसका वरदान पिता।।

दोस्त

रेणुका चन्द्रवंशी
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

मै यादों का किस्सा खोलू तो,
कुछ दोस्त बहुत याद आते है...
मैं गुजरे पलों को सोचू तो
कुछ दोस्त बहुत याद आते है...
अब जाने कौन सी नगरी में
आबाद है जाकर मुद्दत से...
मैं देर रात तक जागूँ तो
कुछ दोस्त बहुत याद आते है...
कुछ बातें थी फूलों जैसी,
कुछ लहजे खुश्बू जैसे थे,
मैं शहर ए–चमन में टहलूँ तो
कुछ दोस्त बहुत याद आते है...
सबकी जिदंगी बदल गयी,
एक नयी सिरे में ढ़ल गयी
किसी को नौकरी से फुरसत नहीं,
किसी को दोस्तों की जरूरत नहीं
सारे यार गुम हो गये है...
''तु'' से तुम और आप हो गये है...
मैं गुजरे पल को सोचूँ तो,
कुछ दोस्त बहुत याद आते है...
धीरे–धीरे उम्र कह जाती है...
जीवन यादों की पुस्तक बन जाती है,
कभी किसी की याद बहुत तड़पाती है,
और कभी यादो के सहारे जिदंगी कट जाती है।
किनारों पर सागर के खजाने नहीं आते,
फिर जीवन में दोस्त पुराने नहीं आते।
जी लो इन पलों को हँस के दोस्त,
फिर लौट के दोस्ती के जमाने नहीं आते।

फर्क नहीं पड़ता

हां अब फर्क नहीं पड़ता किसी के दूर जाने से,
क्योकि मैंने उसे भी दूर जाते देखा।
जिससे दूर जाने का ख्याल मुझे सपने में भी नहीं आता था,
हो अब फर्क नहीं पड़ता किसी के वादो से,
क्योंकि मैंने उसे भी वादा तोड़ते हुए देखा।
जिसके साथ में हजारो वादो किया करता था।
हां अब फर्क नहीं पड़ता किसी के एहसासो से,
क्योंकि मैंने उन एहसासों का मजाक बनते देखा।
जिसे हर वक्त कभी अपने दिल में संजोए बैठा था।
हां अब फर्क नहीं पड़ता किसी की मासूमियत से,
क्योंकि मैंने उस चेहरे को भी बदलते देखा।
जिसे देख मैं अपनी सारा दर्द भुल जाया करता था।
हां अब फर्क नहीं पड़ता किसी के सवालों से,
क्योंकि मैंने उसे भी खामोश होते हुए देखा।
जिसका जवाब देने को मैं हमेशा तैयार रहा करता था।
हां अब फर्क नहीं पड़ता किसी के रूठने से,
क्योंकि मैंने उसे भी रूठते हुए देखा।
जिसकी एक मुस्कुराहट देख, अपनी जिन्दगी जी लिया करता था।
हां अब फर्क नहीं पड़ता किसी के भी बात न करने से,
क्योंकि मैंने उसे भी मुँह मोड़ते हुए देखा,
जिसके आगे मेरा अपना वक्त कुछ भी नहीं था।
हां अब फर्क नहीं पड़ता किसी के भी भूल जाने से,
क्योंकि मैंने उसे भी भूलते हुए देखा।
जिसके साथ मैं हमेशा, हर वक्त ऑनलाईन रहा करता था।

सुखी जीवन के 8 मंत्र

1. पूजा करते हो तो –
विश्वास करना सीखो।
2. बोलने से पहले –
सुनना सीखो।
3. लिखने से पहले –
समझना सीखो।
4. खर्च करने से पहले–
कमाना सीखो।
5. हार मानने से पहले –
फिर से कोशिश करना सीखो।
6. रिश्ते बनाने से पहले –
निभाना सीखो।
7. मरने से पहले –
खुलकर जीना खीखो।
8. रोने से पहले –
किसी को हंसाना सीखो।

नरेन्द्र कुमार
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

घर - परिवार

बुलंदी को छू लेंगे हम...
खुशहाली के हर एक द्वार।।
हाथ सिर पर हो अगर आप के ...
होंगे सारे सपने साकार।।
पूरे समाज में सबसे आगे...
रहेगा अपना घर परिवार...

लोग उदाहरण दिया करते थे...
जब परिवार की बात करते थे।।
इच्छा तो है हर दिल की ये...
बना रहे सदा वही आधार।।
सभ्यता शालीनता और संस्कार।।

सम्मान वही है जज्बात वही है...
हर अपनों का अधिकार वही है।।
उम्मीद आपसे मार्ग प्रशस्त करने का ...
खोते है हम सारे विकार।।
एक जुटता में सबसे आगे...
रहेगा अपना घर परिवार।।

आज संकल्प हम करते है...
सबको साथ ले चलते है।।
इज्जत शोहरत और विद्वता...
का होगा अब सपना साकार।।
पूरे समाज में सबसे आगे...
रहेगा अपना घर परिवार।।

ना मंजिल है कोई ना कोई कारवाँ
बढ़े चले जा रहे है, रूकेंगे कहाँ''

कुछ पल बचा लो अपनों के लिए
जो देखोगे पलट के, ये मिलेंगे कहाँ।।

वक्त का तकाजा कहता है यही
जो बीत गये पल, फिर आयेगा कहाँ।।

आओ इस पल को यादगार बना ले,
जो बातें होंगी अभी, फिर करेंगे कहाँ ।।

हम भागते रहे माया के लिए हर जगह,
सुख जो परिवार में है, वो मिलेगा कहाँ ।।

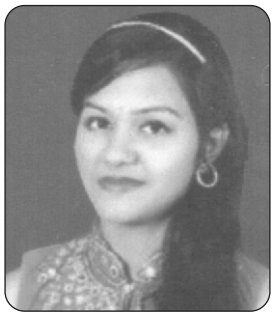

अवन्तिका मिश्रा
बी.ए. तृतीय वर्ष

संविधान

ये शान है ये मान है, वतन का ये सम्मान है,
चले वतन इसी से है, यही मेरा अभिमान है,
ये मेरा संविधान है।

उद्देशिका का मंत्र है, लोकतंत्र ये गणतंत्र है,
न्याय की ये नीति है, सम्प्रभुता की रीति है,
अखंडता इसी से है, यही निरपेक्षता का मान है,
ये मेरा संविधान है।

कानून की दलील है, स्वतंत्रता का ये मील है,
कर्तव्य है, अधिकार है, विचारों का अंबार है,
स्वराज भी इसी से है, इसी से वतन महान है,
ये मेरा संविधान है।

निधि पाण्डेय
बी.ए. प्रथम वर्ष

हौसला

इस जग में जितना जुल्म नहीं
उतने सहने की आदत है,
तानो के शोर मे भी रहकर
सच कहने की आदत है
मैं सागर से भी गहरा हूँ
तुम कितने कंकड़ फेकोंगे,
चुन–चुन कर आगे बढूँगा मैं,
तुम मुझको कब तक रोकोगे
मंजिल उन्हीं को मिलती है
जिनके सपने में जान होती है
पंख से कुछ नहीं होता,
हौसला से उड़ान होती है...

माया सोनी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
के अनमोल वचन

'' सफलता की कहानियाँ मत पढ़ो उससे आपको केवल एक संदेश मिलेगा। असफलता की कहानियां पढ़ो उससे आपको सफल होने के कुछ आइडियाज (विचार) मिलेंगे।

''किसी विद्यार्थी की सबसे जरूरी विशेषताओं में से एक है प्रश्न पूछना। विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने दीजिये।''

''जीवन एक कठिल खेल है आप इस जन्मसिद्ध अधिकार को केवलएक व्यक्ति बनकर ही जीत सकते है।''

''यदि आप अपनी ड्यूटी को सैल्युट करोंगे तो आपको किसी भी व्यक्ति को सैल्युट करने की जरूरत नहीं पडेगी लेकिन यदि आप अपनी ड्यूटी को पोल्युट करोंगे तो आपको हर किसी को सैल्युट करना पड़ेगा।''

''विज्ञान ने ये प्रमाणित किया है कि मानव शरीर लाखें–लाख परमाणुओं से बना है उदाहरण के लिए मैं 5.8x10.27 परमाणुओं से बना हूँ।''

''आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर आप अपनी आदते बदल सकते है और निश्चित रूप से आपकी आदते आपका भविष्य बदल देगा।''

''कभी–कभी कक्षा से बंक मारकर दोस्तों के साथ मस्ती करना अच्छा होता है। क्योकि आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो ये सिर्फ हंसाता ही नहीं, बल्कि अच्छी यादे भी देता है।''

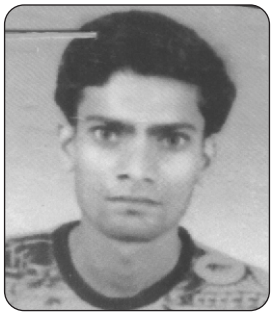

हुलेश कुमार साहू
एम.एस.सी. फायनल

छत्तीसगढ़ी कविता

गजब मिठाथे रे संगी, मोर छत्तीसगढ़ के बासी।
ईही हमर बर तिरीथ गंगा, ईही हमर बर मथरा कासी।।
उठथन बिहनिया करधन मुखारी, अउ झड़कथन बासी।
दिन भर करथन काम बुता, पेट नई होवय खाली।
दार दरहन के कामे नईये, नई लगाय साग तरकारी।
दही मही संग नुन मिर्चा, गोन्दली येकर संगवारी।।
के दिन ले बनाबो माल पुआ, के दिन ले बनाबो तसमई पुरी।
कतका ला बिसाबो सेव डालीया, के दिल ले बिनाबो सोहारी।।
समोसा, जलेबी, पोहा, खोआ, रसगुल्ला नइ मिठावय हमला।
नई खाय सकन होटल के रोज तेलहा फुलहा भजिया।।
सहरिया मन के नकल जो करबो हो जाहि जग हाँसी।
सबसे सस्ता सबसे बढ़ीया मोर छत्तीसगढ़ के बासी।।

जय छत्तीसगढ़

केशर चन्द्रवंशी
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

जीवन में समस्याएं आपको बर्बाद करने के लिए नहीं आती है, अल्कि आपकी छिपी हुई प्रतिभा और ताकत की पहचान कराने आती हैं।

डॉ. ए.पी.जे. कलाम

ALWAYS FEELING GOOD

Friends, one night a fire broke out in. Thamas Edison's factory was burning completely. Then his son finds him and tells that the factory has caught fire.

His son thought that now the father would be very sad, but this did not happen.

Edison smiles on her face and asks her son replied that " I don't know"Then the eddition said, Hey bring him her quickly he will not get such a wonderful view in his life.

Edison said "God is so great" looking at the burnt chimes of the factory. After achieving so many achievements, I became common man. It id good that all my mistakes were burnt in the fire, now I will start aneal Good has given me a good chance.

Friends only a person with positive thinking can say this, the considers himself different from the crowd. special understands. Such a wonderful view can be chest banging. " I am not a common man, I am special."

If yo u also think like. Thamas Edison then you will not make any different in your failures in life rather you will say to yourself . I am special, I will try more next time" So make yourself feel good. Even in bad conditions.

INSPIRATIONAL QUOTES

One of the basic rules of
The universe is that
Nothing is perfect
Perfection simply doesn't exist.
Without imperfection,
Neither you nor i
Would exist.

Don't fear for facing failure
In the first attempt,
Because wen the successful
Maths starts with "zero only"

We cannot sole
Our problems with
The sae thinking
We used when
We created them

It always seens
Impossible until it's done

Never give up on the
thinks that make yaw smile
Be somebody nobody
thought yaw could be
Don't just be good to
others, be good to yourself too.

Push harden them
yesterday if yaw went a
different tomorrow.
Make today ridiculously amazing.

No matter how yew feel
cut up, dress up, show up & never give up.
The darkest nights produce the brightest stars.

Stay positive, work hard
and make it heppen
Different road, often lead to
beautiful destination.
There are so many
beautiful reasons to be happy.

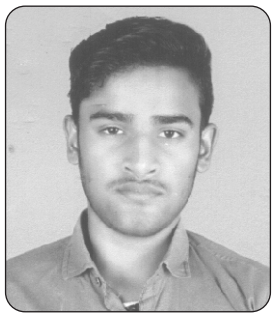

KAMLESH CHANDRAVANSHI
Joint Secretary
B.Sc. Second Year

लक्ष्य

मुस्कान गुप्ता
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

''कोई लक्ष्य मनुष्य के साहस से बड़ा नही, हारा वहीं जो लड़ा नहीं।''

लक्ष्य बड़ा रखो और तब तक उसके पीछे लगे रहो जब तक की उसे पा न लो। एक बार लक्ष्य बनाने के बादआप में उसके प्रति त्याग व समर्पण की भावना होना चाहिए। व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्रतिदिन जीता है। वह उसी क्षेत्र में अपना कदम बढ़ाता है जिससे उसका लक्ष्य उसके करीब आये। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत साहस और त्याग करने की क्षमता का सुविकसित होना अतिआवश्यक है। यदि इन तीनों में से एक गुण भी नहीं है तो लक्ष्य धूमिल है। लक्ष्य निर्धारण के पश्चात् एक सबसे महत्वपूर्ण चीज जिसे – ''आत्मविश्वास'' कहते है का होना अतिआवश्यक है। आप अपने लक्ष्य को इसके बिना नहीं साध सकते है। जिस किसी का भी लक्ष्य निर्धारित होता है वह निरंतर उस क्षेत्र में आगे बढ़ता है, उसका मिजाज कुछ अलग होता है। वह सदैव अपने लक्ष्य के प्रति सजग व समर्पित रहता है। एक बार जब लक्ष्य की प्राप्ति होती है तो उसे वह बयाँ नहीं कर पाता। उसे वे लोग बयाँ करते है जिनको उनकी तरह बनना है। इसलिए सबसे पहले एक ''लक्ष्य'' का निर्माण बहुत ही जरूरी है।

सफल वही होता है जो अपने बनाये गये लक्ष्य की राह में चलें।

इक पंक्षी देखा था मैंने

एक पेड़ की डाली के कोनो पर
मेहमान नया कोई आया था,
संघर्ष से सफलता पाने का
संदेश नया वो लाया था,
इक पंक्षी देखा था मैंने
मेरे मन को वो भाया था।

बसंत के मौसम मे बगिया में
हर ओर अंकुर फुट रहे थे
नयन हमारे आनंदित हो
इस दृश्य का आनंद लूट रहे थे
हर ओर ही हर्ष उल्लास सा था
हर ओर भरी हरियाली थी
तभी अचानक नजर पड़ी
वो पेड़ की डाली खाली थी
कुछ सोच रहा था उस पर बैठा
ऊपर से पेड़ का साया था,
इक पंक्षी देखा था मैंने
मेरे मन को वो भाया था।

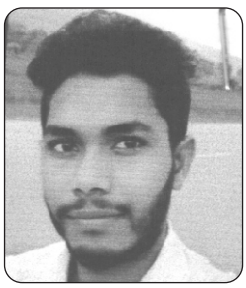

राजेश सोनवानी
बी.एस.सी अंतिम वर्ष

आत्मविश्वास

संसार में दो तरह के जन होते है। पहले जो आत्मविश्वास से परिपूर्ण होता है तथा दूसरे जिनके पास आत्मविश्वास की कमी होती है। इस आत्म–विश्वास का एक और अप्रत्यक्ष प्रकार होता है– जिसे अति आत्मविश्वास कहते है। जो किसी भी के लिए घातक सिद्ध होता है। यदि हम अपने ''जीवन'' को एक क्रिकेट मैच की तरह जीये। जहाँ न स्टम्प, न क्षेत्ररक्षक, न विकेट कीपर हो। आप तब तक ''आऊट'' नहीं हो सकते है जब तक आप अपना मैच न छोड़ दो। सामने से गेंद आ रही है आत्मविश्वासी व्यक्ति इस गेंद को बखुबी से खेलेगा और जिसके पास कमी है वह डर जायेगा, हताश हो जायेगा। कम आत्मविश्वास वाले को यह डर है कि कही व ''आऊट'' न हो जाये लेकिन यह ''जिंदगी'' का मैच है जहाँ आपको हर 'दिन 'एक 'गेंद' की तरह मिलती है। आत्मविश्वासी व्यक्ति डॉट करने के बाद नहीं घबराता क्योंकि उसे पताहै कि अगली गेंद या दिन फिर आयेगा, उसके लिए जिया जाये। आत्मविश्वासी व्यक्ति अपने जीवन को अच्छे से जीता है वह हर संघर्ष के लिए तैयार रहता है और सदैव सफलता के पथ पर चलता है।

'' आत्म–विश्वास'' ही बड़ी से बड़ी कठिनाइयों, परिस्थितियों में सफलता का मार्गदर्शक है।''

आसीफ अली
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

परिश्रम का महत्व

कामता प्रसाद निर्मलकर
बी.ए. तृतीय वर्ष

कहते है कि परिश्रम सफलता की कुंजी है। जिसने परिश्रम किया सफलता ने उसी के चरण छुए। बिना परिश्रम के कोई कार्य साध्य नहीं हो सकता और परिश्रम दो प्रकार के होते है। 1. शरीरिक परिश्रम 2. मानसिक परिश्रम

परिश्रम के इन दोनों प्रकारों में तालमेल होना आवश्यक है।

आज के समय में लोग परिश्रम करना नहीं चाहते, सब सुविधा बिना परिश्रम के ही मिल जाये सोचते है । इस कारण से परिश्रम का महत्व धीरे–धीरे घटता जा रहा है। अगर कोई भी व्यक्ति परिश्रम नहीं करेगा और वो फल की आशा करेगा कि हमें सारी चीजें मिल जायेगी जीवन मे तो वो लोगों की आलस्य प्रवृति है। अगर पढ़ने वाले विद्यार्थी परिश्रम किये बिना ही अपने अच्छे अंक पाने की उम्मीद रखते है तो उसे अच्छे अंक तभी मिलेगा जब वो मेहनत करेंगे।

परिश्रम से ही कार्य सिद्ध होता है ना कि इच्छा जताने से, विद्यार्थी जो होता है वो मानसिक परिश्रम करते है और श्रमिक शारीरिक परिश्रम का संबंध स्वास्थ्य से भी है। परिश्रमी व्यक्ति अपने शरीर और मस्तिष्क दोनों से स्वस्थ होता है। आलसी व्यक्ति शरीर और मस्तिष्क दोनों से रोगी होता है।

हमारे सामाजिक जीवन में भी सामाजिक कार्य के लिए श्रम का बहुत महत्व है, किसी भी सामाजिक कार्य के लिए लोगों का सामूहिक सहयोग आवश्यक है। उदाहरण – किसी गांव में कुंआ या तालाब खोदना है जो एक व्यक्ति के लिए संभव नहीं है, सहयोग की आवश्यकता होगी। परिश्रम चाहे मानसिक अथवा शरीरिक हो दोनों का महत्व बराबर होनी चाहिए।

मातृ देवो भव पितृ देवो भव

राधा साहू
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

अपने माता पिता को कभी मत रूलाना । दर्द होता है ये देख के कि माता पिता ने जिंदगी दी खुद की खुशियों को मिटाकर सब कुछ दिया। आज उनके लिए ही घर में जगह नहीं है। जिन माता–पिता ने अपना सारा जीवन अपने बच्चों पर कुर्बान कर दिया आज जब उन्हें जरूरत है तो उन्हें देने केलिए बच्चों के पास कुछ भी नहीं है। माता पिता के साथ रहना एक बंधन सा लगता है। घर के असली मालिक तो हमारे माता–पिता है। उसे जरूरत नहीं पूजा और पाठ की।जिसने पूजा की अपने माँ–बाप की।।

हमारी संस्कृति और वेदों में भी भगवान से भी पहले माता पिता का स्थान बताया गया। सबसे पहले मातृ देवो भव : पितृ देवो भव :।

माता पिता प्रथम पूजनीय है । माता पिता ने हमको बोलना सिखाया आज उनको ही चुप करा देते हैं। माता पिता के होने से मैं खुद को मुकम्मल मानती हूँ, मेरे भगवान से पहले मैं अपने माता–पिता को जानती हूँ।

याद रखना जिस दिन हमारी वजह से हमारे माता–पिता की आँखों में आँसू आ गए हमारे द्वारा किए गए सारे पूण्य सारे कर्म धर्म सब उसके आँसुओं के साथ बह जाएंगे।

जो लोग अपने माता पिता को रूलाते है उनकी पूजा भगवान कभी भी स्वीकार नहीं करता। घर के देवता को रूला के मंदिर के देवता को राजी करने से क्या फायदा और याद रखना जो कुछ भी आप अपने माता पिता के साथ करेंगे वही आपके बच्चे आपके साथ करेंगे। दुनिया गोल है जहाँ से घुमना शुरू होता है वही आके रूकती है।

- सत्यवचन -

जो पिता के पैरों को छूता है, वो कभी गरीब नहीं होता।
जो माँ के पैरों को छूता है, वो कभी बदनसीब नहीं होता।
जो भाई के पैरों को छूता है, वो कभी उदास नहीं होता।
जो बहन के पैरों को छूता है, वो कभी चरित्रहीन नहीं होता।
जो गुरू के पैरों को छूता है, उस जैसे कोई खुशनसीब नहीं होता।

आइये एक दीप ऐसा जलायें

संगीता चन्द्रवंशी
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

हम देखते हैं कि दीया जलाना एक शुभ कार्य माना जाता है। इसलिए हर एक शुभ कार्य एवं उत्सव में दीया जलायें जाते हैं। लेकिन दीया जला देने से सब शुभ हो जाता तो फिर हमने तो देखा है कि कई उत्सवों में दीप जलाकर लोग लड़ते–झगड़ते और उपद्रव मचाते है ऐसे कार्य को कदापि शुभ नहीं माना जाता है।

फिर ऐसे जलाने से क्या फायदा। दीये केवल रात्रि के अंधेरे दूर करने एवं शुभ्रता व्यक्त करने के लिए जलाए जाते है।

दीप जलाना एक शुभ कार्य के प्रतीक ही हुआ वास्तविक शुभ नहीं हुआ। फिर आपके दीये जलाने का क्या मतलअ हुआ और क्या शुभ हुआ! तो एक वास्तविक प्रश्न उठता है कि शुभ होगा कब। जब तक मनुष्य उस दीपक के प्रकाश की तरह अपने अंतरात्मा एवं हृदय के दीये नहीं जलायेंगे तब तक कोई शुभ होने वाला नही है और होगा तो यदा–कदा (कभी–कभी)। इसके लिए तो अपने अन्तरात्मा के दीये जलाने होंगे।

अर्थात् सुबह से लेकर रात्रि तक और रात्रि से लेकर सुबह तक प्रत्येक मनुष्य को ऐसे सुन्दर कार्य करते गुजरे कि किसी को उसके कार्य से आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

मनुष्य को अपने अधिकार एवं कर्तव्य को ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए और जरूरत हो तो अपने गुरू से सुझाव जरूर लेना चाहिए जिससे कोई बाधा ना हो।

अर्थात् सुबह से लेकर रात्रि तक हम जो सुनते है, बोलते है, पढ़ते है, देखते है आदि, वही हमारे चरित्र निर्माण करता है जैसा हो या जिस परिस्थिति में हो वह सब आपके चरित्र के हिस्से है।

इस प्रकार जो चरित्र बनता है वही व्यवहार में आता है जो शुभ व अशुभ के रूप में हमारे सामने आते है। यदि आप अच्छे चरित्र बनाये है तो आप एक अच्छे व शुभ वातावरण के निर्माण के साथ किसी कार्य को संपन्न करेंगे।

यही सीख एक दीपक की रोशनी से मिलती है जो प्रत्येक मनुष्य को जगाती है और जगाती रहेगी लेकिन मनुष्य है कि वह जागेगा कब मनुष्य का जागना इसके हृदय का दीप प्रकाशित होना है ।

''आइये एक दीप ऐसा जलायेंगे।''

जीवन की सच्चाई

सीता झारिया
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

एक कौवा था... और कौवा को तकलीफ क्या थी जानते है ? क्योंकि वो काला था। वहाँ से एक साधू निकले, साधु के गाल पे एक मोती टपका पानी का तो साधु ऊपर देखे.. . कौवा रो रहा था।

साधु ने बोला रोता क्यूं हैं ?

तो उसने बोला... रोऊ नहीं तो क्या करू ! ये जीवन दिया ईश्वर ने रंग काला बनाया... ये कोई रंग है !!!

साधु ने बोला – तु खुश नहीं है ?

कोवा बोला – बिल्कुल नहीं हूं।

साधु ने बोला – क्या तकलीफ है ?

कोवा बोला – तकलीफ ही तकलीफ है... जिसके घर पर बैठो कोव–काँव करो... लोग उड़ाएँ... कोई पालता है हमें ? किसी ने हमें पाल के खाना खिलाया... श्राद्ध में काम आता हूं... झुठन खिलाते है मुझे... मैं कैसे खुश रहूं।

तो साधु बोला – क्या बनना चाहता है अगर दोबारा मौका मिले तो ... बनाता हू चल आज...

कोवा बोला – बाबा मैं हंस बनना पसंद करूंगा।

क्या सफेद रंग, शांति का प्रतीक... आह।

साधु ने बोला – एक बार हंस से मिल आ —

कौवा हंस के पास गया... हंस भाई ! क्या मस्त रहता है न तू... क्या सफेद रंग ... बहुत खुश होगा न तू ?

हंस बोला – कौन बोला रे तुझको ?

We are not happy.... Not at all.

बोले तुझको क्या तकलीफ है ?

वो बोले ये कोई रंग है सफेद... मौत के बाद का रंग है ये यानी मैं सफेद मे सफेद मिल जाता हूं दिखता भी नहीं ये भी कोई रंग है.. . भागते–भागते दोनों साधु के पास गये बोले बाबा मामला कुछ गड़बड़ है...

बाबा हंस से पुछे ! तेरे को क्या बनना है अगर मौका मिले तो।

हंस बोला – तोता बना दो बाबा ! बस

बाबा बोला जा एक बार तोता से भी मिल आ...

अब दोनों तोता के पास गए चारों ओर उसे ढुंढ़ने लगे। एक पेड़ में बहुत सारे तोते बैठे थे अंत में तोता मिला...

दोनों तोता से बोले ! भाई तोता क्या मस्त जिंदगी है तेरा, तेरे को क्या–क्या नहीं खिलाते बादाम तक लोग तेरे को खिलाते है। लोग तुझे बहुत पसंद करते है आपका... तोता बोला! कौन बोला है तेरे को मैं बिल्कुल खुश नहीं हूं।

बोले क्या तकलीफ है तुझें ? बोला तकलीफ ये है बेटा कि तुम चार चक्कर लगा गए हरे मे हरा तुमको दिखता नहीं था मै ये कोई रंग है साला।

तीनों एक साथ साधु के पास आए बोले महराज! तोता बोला एक बार मोर बना दो । क्या नेशनल बर्ड है हमारा, क्या मस्त जिंदगी है... महराज बोलो तीनों को बनाता हूं जाओ एक बार मोर से मिल आयो... तीनों मोर के पास गए...

बोले, मोर भाई क्या मस्त जिंदगी है तेरी सभी लोग दिवाने है तेरे बहुत खुश रहता होगा, मोर बोला ! कौन बोला रे तुझको, मैं बहुत तकलीफ मे हूं।

तीनों बोले क्या तकलीफ है तुम्हें ?

मोर बोला ! देख रोज शिकारी आते है, हमारे शरीर से नोच नोचकर पंख ले जाते है, हमारे एक घण्टे का भी पता नही रहता कि हम कब मर जाए। अरे तुम... हम जैसा बनोगे। इस प्रकार हम कैसे खुश रहें। जब हमारे जीने का पता ही नहीं।

कौवा बोला तो इस दुनिया में कौन खुश हैं क्या बनना चाहिए हमे। तो मोर बोला तू ! कौवा बोला ये कैसे ? मोर बोला क्या तुमने चिकन बिरयानी नाम सुना है? हाँ, मटन बिरयानी नाम सुना है? हां, क्या कभी कौवा बिरयानी सुना है ? क्या तेरे को शिकारी मारते है ? नहीं न तो, कैसे तुम तकलीफ मे हो सकते हो ? सबसे ज्यादा खुश तुम हो मेरे भाई ।

तो आप जो है... जिस अवस्था में है, जिस रंग में है... मस्त है यार। किसी से अपनी तुलना मत करो तुम्हारे जैसा पक्षी भगवान ने दूसरा नहीं बनाया...

तुम्हारे जैसा कोई नहीं है तुम अपने मे पूर्ण हो यार...।

You are unique... Don't compare your self...

जीवन का अर्थ और उद्देश्य

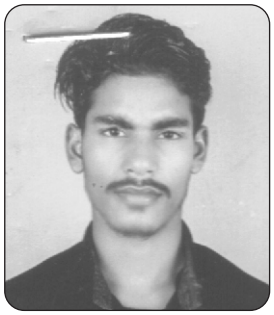

सुनील कुमार नवरंग
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

इस संसार में अनेक प्रकार के लोग हैं, जो अपनी जिंदगी अपनी सोच के आधार पर जी रहे हैं। हर कोई जिंदगी की दौड़ में शामिल है। एक–दुसरे को पछाड़ना ही जिंदगी का मकसद बन गया है। आज किसी के पास वक्त नहीं है, अपनों के लिए भी नहीं। सब जिंदगी जी रहे है लेकिन कही सूकुन नहीं कहीं शांति नहीं।

आज कल तो परमात्मा भी शक के दायरे में है, परमात्मा एक से कई बन गए है। अब तो इस बात पर लड़ाई होती है कौन सा परमात्मा श्रेष्ठ है ?

क्या यही है जीवन ? जन्म से मृत्यु तक हमें सिर्फ संघर्ष करना चाहिए? क्या है जीवन का अर्थ और उद्देश्य?

शांत और सुकुनभरी जिंदगी के लिए हमें क्या करना चाहिए ? नीचे दिये गये पंक्तियों मैं एक पागल के मुंह से सुना था –

इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाये
इस तरह न खर्च करो कि कर्जा हो जाये
इस तरह न खाओ कि मर्ज हो जाये
इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाये
इस तरह न चलो कि देर हो जाये
इस तरह न सोचो कि चिंता हो जाये

लेकिन आजकल मनुष्य इसको विपरीत करता है। यह एक अमूल्य अवसर है परमात्मा के बारे में जानने का, इस अवसर को गंवाना सबसे भारी नुकसान है।

मनुष्य का जीवन अर्थपूर्ण होगा अगर वह किसी दूसरे के काम आया। मनुष्य जीवन का उद्देश्य परमात्मा के बारे में जानना है अर्थात् मोक्ष !

परमात्मा के बारे में जानने के लिए मन मे सबसे पहले बलवती इच्छा होनी चाहिए। वह इच्छा तब तक नहीं आयेगी जब तक मनुष्य का हृदय पवित्र नहीं होगा। अपने लिए तो हर कोई जीता है, लेकिन जो औरों के लिए भी जीता है उसको हमेशा याद किया जाता है।

खाने के लिए दो वक्त की रोटी, तन के लिए जरूरी कपड़े और रहने के लिए एक मकान मनुष्य की न्यूनतम आवश्यकता है। जिनको यह नसीब नहीं वह मदद के तलबदार है जिनके पास इससे ज्यादा है उन्हें मदद करनी चाहिए ।

स्वामी शिवानन्दा कहते है दो और ज्यादा दो, तुम्हारा तिजोरी कभी भी खाली नहीं होगा। दान एक हृदय को पवित्र करने वाली क्रिया है जो दिया वो जीया।

इंसान को नमक की तरह होना चाहिए जो खाने मे रहता तो है पर दिखाई नहीं देता और अगर न हो तो उसको कमी महसूस होती है।

मनुष्य की जिंदगी का अर्थ तब पूरा होगा जब वह किसी और के काम आएगा।

मनुष्य की जिंदगी का उद्देश्य परमात्मा को जानना है, इस मकसद के लिए इन्सान को कोशिश करनी चाहिए।

इसमें अनेक बाधाएं आयेगी लेकिन लगातार कोशिश ही सफलता लाती है, धीरे–धीरे बहती हुई एक धारा पत्थर में छेद कर देती है। निरंतर प्रयास होनी चाहिए किसी मकसद के लिए खड़े होतो पेड़ कि तरह खड़े रहो, और गिरना है तो गिरो बीज की तरह ताकि दोबारा उग सको । उस मकसद को पूरा करने के लिए। गिरने से हार नहीं होती, हार तब होती है जब और कोशिश नहीं होती।

इस अनमोल मनुष्य जीवन को सही मार्ग में लगाकर परमात्मा को जानना ही ध्येय होना चाहिए। यह मुश्किल जरूर है लेकिन नामुमकिन नहीं।

हम अगर वह करेंगे जो हम करते हुए आये है तो हमें वह मिलेगा जो हमें हमेशा मिलता आया है। परमात्मा को पाने के लिए हमें कुछ ओर करना चाहिए। अपने जीवन में संस्कार लाना है फिर श्रृंखला लाना है फिर नमक की तरह जीना है और परमात्मा को पाना है। जीवन का अर्थ और उद्देश्य दोनो पूरा हो जायेगा।

जीवन के उद्देश्य को हासिल करने के लिए जीवन का अर्थ पूरा होना चाहिए । इसलिए हमें सबसे पहले एक अच्छा इंसान बनना चाहिए।

DREAM OR AMBITION

जीवन में अपना सपना खुद देखो और उसे खुली आंखों से देखों, ताकि वो जब सच हो तो सबसे पहले तुम्हें दिखे। इस दुनिया में सब कुछ आसान है क्योंकि हम इस संसार को जिस नजर से देखते है वह हमें उसी तरह दिखाई देता है।

इस जीवन को जीने के लिए इंसान का एक अरमान है जिसे सपना कहते है। एक इंसान जिसके मन से एक तमन्ना होती है, जिसे पाने के लिए वो कुछ भी खोने को तैयार होता है, जिसे वो पाना चाहता है, चाहे उसे पाने के लिए कितना भी दर्द को सहन करने को तैयार हो, जीवन में कितनी भी मुश्किलें आये, उससे संघर्ष करने को तैयार हो, तो ऐसी कोई चीज नही जो उसे अपने लक्ष्य को पाने से रोक सके।

इंसान के जीवन का कोई महत्व नहीं है जब तक उसका कोई सपना नही, अरमान नहीं कुछ लक्ष्य नहीं क्योंकि–

ऐसा बेकार का जीवन तो एक पशु का होता है इसलिए जीने का एक मकसद होना ही एक मनुष्य का पहचान होती है और इस मकसद का नाम ही सपना है क्योकि –

''मंजिल चाहे कितनी भी कठिन हो, रास्ता कदमों के नीचे ही होता है।''

इंसान को जीने के लिए –

Accept your past without regret
Handle your present with confidence, and
face your future without tear.

चन्द्रकुमार पटेल
बी.ए. तृतीय वर्ष

जिन्दगी की सच्चाई

आप अपने लिए मत जीयो क्योंकि अपने लिए तो सभी जीया करते है। जो इंसान दुसरों का दु:ख दर्द समझता है, दुसरों के लिए जीता है, वही वास्तव में सच्चा ईसान है। आप उन गरीब असहाय लोगों की मदद कीजिए, जिसे रोटी, कपड़ा और मकान की जरूरत है। उनके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं है, खाने के लिए खाना नहीं है और रहने के लिए मकान नहीं है उन गरीबो की सहायता कीजिए, उनको खाना दीजिए और पहनने के लिए कपड़ा दीजिए। उन गरीबो का जीवन कैसे कष्ट से कटता है वो उनको पता है, उन गरीबो को पढ़ना है, लेकिन उनके पास, जरूरत की चीजे नही है कई लोग ऐसे है जिनको उनके घर वाले पढ़ा रहे है, उनकी सारी जरूरत को पूरी कर रहे है, मगर उसको नहीं पढ़ना है। ये सही बात है कि इंसान के पास जो कुछ होता है वो उसका कुछ उपयोग नहीं करता। आप इस भरोसे में मत रहिए कि आप हमेशा अमीर रहेंगे क्योंकि राजा को रंक बनते देर नहीं लगती। आप अगर दुसरों की सहायता करोंगे तो लोग आपकी भी एक दिन सहायता करेंगे।

टूट जाता है, वो रिश्ता जो गरीबी में खास होता है।
लाखों यार मिलते है, जब पैसा पास होता है।।

''नाम'' और ''बदनाम'' में क्या फर्क है ?
''नाम'' खुद कमाना पड़ता है और ''बदनामी'' लोग कमा के आपको देते है।

जरूरी नही कि जिनमे सांसे नही वो मुर्दा है,
जिनमें इंयानियत नहीं वो भी मुर्दा ही है।
देश कुछ इस तरह से बदलने लगा है कि
लोग गाय चराने में ''शर्म'' और
कुत्ता चराने में ''गर्व'' करने लगे है।।

रोशनी जायसवाल
बी.ए. प्रथम वर्ष

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की कविताएं

कदम मिलाकर चलना होगा

बाधाएं आती हैं, आएं
घिरे प्रलय की घोर घटाएं
पावों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसे यदि ज्वलाएं
निज हाथों में हंसते–हंसते
आग लगाकर जलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।

हास्य–रूदन में तूफानों में
अगर असंख्य बलिदानों में
उद्यानों में वीरानों में
अपमानों में, सम्मानों में
उन्नत मस्तक, उभरा सीना
पीड़ाओं मे पलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।

उजियारे मे, अंधकार मे
कल कहार के बीच धार मे
घोर घृणा में पूत प्यार मे
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार मे
जीवन के शत्–शत् आकर्षक
अरमानों को ढ़लना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।

कुछ कांटों से सज्जित जीवन
प्रखर प्यारे से वंचित यौवन
नीरवता से मुखरित मधुबन
परहित अर्पित अपना तन–मन
जीवन को शत्–शत् आहुति मे
जलना होगा, गलना होगा
कदम मिलाकर चलना होगा।

संजय साहू
बी.ए. द्वितीय वर्ष

गीत नया गाता हूँ

बेनकाब चेहरे है, दाग बड़े गहरे हैं,
टूटता तिलिस्म आज सच से भय खाता हूँ
गीत नया गाता हूँ...

लगी कुछ ऐसी नजर बिखरा शीशे सा शहर
अपनों के मेले में मीत नहीं पाता हूँ
गीत नया गाता हूँ...

पीठ में छुरी सा चांद, राहू गया रेखा फांद
मुक्ति के क्षणों में बार–बार बंध जाता हूं
गीत नया गाता हूँ...

टूटे हुए तारों से फूटे बासंती स्वर
पत्थर की छाती में उब आया अंकुर
झरे सब पीले पात कोयल की कुहुक रात
प्राची में अरूणिमा की रेख–देख पाता हूं
गीत नया गाता हूँ...

टूटे हुए सपनों की कौन सुने सिसकी
अन्तर की चीर व्यथा पालकों की ठिठकी
हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा
काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूं
गीत नया गाता हूँ...

अहिंसा

मैं अहिंसा का विरोध करती हूँ
क्योंकि उससे पाया हुआ समाधान कुछ समय के लिए होता है
लेकिन उससे पैदा हुआ नफरत हमेशा बहता है।
दुर्बल लोग कभी क्षमा नहीं कर सकते ।
क्षमा करना तो बलवानों का गुण है।।
अपने नाम को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है।
अपने आप को दूसरों की सेवा में खो देना।।
अपने उद्देश्य में खुद विश्वास रखने वाला।
सुक्ष्म जीव इतिहास के रूख को बदल सकता है।।
अपने आप को ऊपर उठाने के लिए ।
अपने व्यक्तित्व को ऊपर उठाना पड़ता है।।
व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित प्राणी है।
वो जो सोचता है वही बन जाता है।।
खुशी तब मिलेगी जब आप जो सोचते हो।
जो आप कहते है और जो आप करते हो वो एक हो।।
आप मानवता में विश्वास मत खाईये मानवता सागर की तरह है,
अगर इसकी कुछ बुन्द गन्दी है तो पूरा सागर गन्दा नहीं हो जाता।
व्यक्ति की पहचान उसके कर्मो से होती है
कर्म ही व्यक्ति को भला या बुरा बनाता है।
हम व्यक्ति दूसरो की नकल करते है
लेकिन अपने अन्दर झाांक कर नही देखते कि हम क्या है
अगर हम अपने अंदर देखे तो हम अपने आप को लोगो से बेहतर पायेंगे।
कोई व्यक्ति छोटा या बड़ा नहीं होता, छोटी या बड़ी सोच होती है।
सोच जो सबके के लिए एक समान नही होती।
अपनी सोच को इतना बड़ा बनाए की लोग आपके आगे खुद झुक जाये और
अपने आप को इतना झुकाओं की लोगों को कहने का मौका मत मिले।
मनुष्य को हमेशा मौका नही ढुंढ़ना चाहिए,
क्योंकि जो आज है वही सबसे अच्छा है।।

पुष्पा चन्द्रवंशी
बी.एस.सी तृतीय वर्ष

समय का सदुपयोग

समय एक अनमोल वस्तु है। खोई हुई कोई भी वस्तु मिल सकती है, किन्तु बीता हुआ समय कभी भी वापस नहीं आता क्योंकि समय किसी की प्रतीक्षा नही करता है।

यह सृष्टि का काल चक्र है जो कभी नही थकता हैं। कर्म करके ही मनुष्य अपने समय का सदुपयोग कर सकता है। अपने बहुमूल्य जीवन की कीमत वही मनुष्य जान सकता है, जो एक–एक पल की कीमत समझता है।

जहाँ समय के सदुपयोग के मनुष्य महान बनता है वही समय के दुरूपयोग से पतन की ओर अग्रसर होता है। जिन कार्यो के करने के लाभ के स्थान पर हानि होती है। उन कार्यो को करना समय का दुरूपयोग कहलाता है।

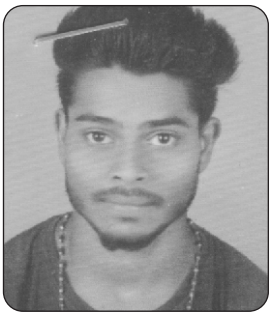

चमन निर्मलकर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कन्या भ्रूण हत्या का कारण

अमृता चंदेल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कुछ सांस्कृतिक और सामाजिक–आर्थिक नीतियों के कारण पुराने समय से किया जा रहा कन्या भ्रूण हत्या एक अनैतिक कार्य है। भारतीय समाज में कन्या भ्रूण हत्या के निम्न कारण –

कन्या भ्रूण हत्या की मुख्य वजह वालिका शिशु पर बालक शिशु की प्राथमिकता है, क्योंकि पुत्र आय का मुख्य स्त्रोत होता है जबकि लड़कियां उपभोक्ता के रूप में होती है, समाज में गलतफहमी है कि लड़के अपने अभिभावक की सेवा करते जबकि लड़कियां पराया धन होती है।

पुरूष प्रधान भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति निम्न है –

अभिभावक मानते है कि पुत्र समाज में उनके नाम को आगे बढ़ायेंगे जबकि लड़कियां घर संभालने के लिए होती है । गैर कानूनी लिंग परीक्षण और बालिका शिशु की समाप्ति के लिए भारत में दुसरा बड़ा कारण गर्भपात की कानूनी मान्यता है।

कन्या भ्रूण हत्या ने बुराईयों की एक श्रृंखला को जन्म दिया है । पिछले तीन दशकों में बढ़े पैमाने पर कन्या भ्रुण हत्या के कुप्रभाव गिरते लिंगानुपात और विवाह योग्य लड़कों के लिए वधुओं की कमी के रूप मे सामने आये है। बलात्कार इसके स्वाभाविक परिणाम है । पिछले कुछ वर्षो से यौन अपराधों का तेजीसे बढ़ता ग्राफ असमान लिंगानुपात के परिणामों से जुड़ा है।

स्वच्छ भारत अभियान

गाँधी जी का सपना, स्वच्छ भारत हो अपना
स्वच्छ होगा देश, स्वस्थ्य होंगे वासी।
बाहर भी दिखाएंगे अपने घर वाले संस्कार,
तभी होगा स्वच्छ भारत का सपना साकार।
स्वच्छता अपनाइये, बीमारी भगाइयें।
लगा सको तो बाग लगाओ, आग लगाना मत सीखो,
फैला सको तो प्यार फैलाओ, कचरा फैलाना मत खीखो।
पेड़ बचाओ मलबा हटाओं
स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत
क्लीन इंडिया ग्रीन इंडिया
साफ सफाई का सपना था बापू जी के ध्यान में।
आबो मिल सब हाथ बटायें स्वच्छ भारत अभियान में।
घर आंगन की करो सफई, साफ दिखे हर कोना / इधर उधर मत फेकों कूड़ा दिल में यही संजोना / करो इकट्टा एक साथ सब ड़ालों कूड़ेदान में / आओ मिल सब हाथ बढ़ाये स्वच्छ भारत अभियान में।

करें प्रतिज्ञा रखेंगे स्वच्छता का ध्यान तभी बनेगा अपना भारत महान।

अनमोल वचन

गुरू और समुद्र दोनों ही गहरे हैं पर दोनो में एक ही फर्क है, समुद्र की गहराई में इन्सान डूब जाता है और गुरू की गहराई में इन्सान तर जाता है।

शिक्षक और सड़क दोनों एक जैसे होते है जो खुद जहाँ है वहीं पर रहते है, मगर दुसरों को उनकी मंजिल तक पहुंचा ही देते हैं।

जो पानी से नहायेगा वो सिर्फ लिबास बदलते है और जो पसीने से नहायेगा वो इतिहास बदलते है।

अगर एक हारा हुआ इन्सान हारने के बाद भी मुस्करा दे तो वो जीतने वाला भी जीत की खुशी खो देता है।

अगर जिंदगी में कुछ पाना हो, तो तरीके बदलो इरादे नहीं।

साइबर क्राइम

प्रतिमा बंजारे
बी.ए. तृतीय वर्ष

साइबर क्राइम एक ऐसा अपराध है, जिसमें कम्प्यूटर और नेटवर्क शामिल है। किसी भी कम्प्यूटर का अपराध स्थान पर मिलन या कम्प्यूटर के माध्यम से कोई अपराध करना साइबर क्राइम कहलाता है। इसमें कम्प्यूटर नेटवर्क शामिल नहीं होता है, किसी की निजी जानकारी प्राप्त करना और उसका गलत उपयोग करना साइबर क्राइम की श्रेणी आता है। जिसमें कम्प्यूटर और नेटवर्क शामिल होता है। किसी भी कम्प्यूटर का अपराधिकस्थान पर मिलना या कम्प्यूटर से कोई अपराध करना कम्प्यूटर अपराध कहलाता है, कम्प्यूटर अपराध में नेटवर्क शामिल नही होता है। किसी की निजी जानकारी को प्राप्त करना और उनका गलत उपयोग करना किसी की भी निजी जानकारी कम्प्यूटर से निकाल लेना या चोरी कर लेना भी अपराध कहलाता है।

साइबर क्राइम जैसे – जानकारी चोरी, जानकारी को मिटाना, जानकारी में फेरबदल करना, किसी की जानकारी को किसी को दे देना या नष्ट करना। साइबर क्राइम कई प्रकार के है जैसे कि स्पैम ईमेल, हैकिंग, फिशिंग, वायरस को डालना किसी की जानकारी ऑनलाइन प्राप्त करना या किसी पर हर वक्त नजर रखना।

कम्प्यूटर अपराध के प्रकार :–

1. जानकारी चोरी करना – किसी के भी कम्प्यूटर से उसकी निजी जानकारी निकालना, जैसे उपयोगकर्ता का नाम या पासवर्ड आदि।
2. जानकारी मिटाना – किसी कम्प्यूटर से जानकारी मिटाना ताकि उसे नुकसान हो या कोई जरूरी जानकारी को मिटाना।
3. जानकारी में फेरबदल करना – जानकारी में कुछ हटाना या जोड़ना उस जानकारी को बदल देना।
4. बाहरी नुकसान – कम्प्यूटर के भागों को नष्ट करना, उसे तोड़ना या भागो की चोरी करना भी कम्प्यूटर अपराध में आता है।

साइबर क्राइम के प्रकार :–

स्पैम ईमेल – हमारे मेल आई डी. में अनेक प्रकार के मेल आते है जिसमें ऐसे ईमेल भी होते है जो कम्प्यूटर को नुकसान पहुंचाते है। उन ई–मेल से सारे कम्प्यूटर में खराबी आ जाती है।

हैकिंग – किसी की भी निजी जानकारी को हैक करना जैसे कि उपयोगकर्ता का नाम व पासवर्ड और उसमें फेर–बदल करना।

फिशिंग – किसी के पास स्पैम ईमेल भेजना ताकि वो अपनी निजी जानकारी दे और उसकी जानकारी को नुकसान हो सके ऐसे ईमेल आकर्षक होता है।

वायरस फैलाना – साइबर अपराधी कुछ ऐसे सॉफ्टवेयर आपके कम्प्यूटर पर भेजते है। वर्म वार्जन हॉर्स, लॉजिक हॉर्स आदि वायरस शामिल है, यह आपके कम्प्यूटर को काफी हानि पहुंचा सकता है।

सॉफ्टवेयर पाइरेसी – सॉफ्टवेयर की नकल तैयार कर सस्ते दामों में बेचना भी साइबर क्राइम के अंतर्गत आता है। इससे सॉफ्टवेयर कम्पनियों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है।

फर्जी बैंक कॉल – आपको जाली ईमेल, मैसेज या फोन कॉल प्राप्त हो जो आपका बैकिंग जैसा लगे जिसमें आपसे पूछा जाए कि आपके ए.टी.एम. नम्बर और पासवर्ड की आवश्यकता है। यदि आपके द्वारा जानकारी नहीं दी गई तो आपके खाता बन्द कर दिया जायेगा इस लिंक पर सूचना दे, याद रखें किसी भी बैंक द्वारा ऐसी जानकारी कभी भी इस तरह नहीं माग किया जाता है और भूलकर भी अपनी किसी भी इस प्रकार की जानकारी को ईमेल, फोनकॉल या मैसेज के माध्यम से नही बताये।

सोशल नेटवर्किंग – बहुत से लोग सोशल नेटवर्किंग साइटों पर सामाजिक वैचारिक, धार्मिक और राजनैतिक अपवाह फैलाने का काम करते है और जो अंजाने में ऐसे लिंक को शेयर करते है । वो भी साइबर अपराध और साइबर आतंकवाद की श्रेणी में आता है।

साइबर किलिंग – फेसबुक जैसे सोशल नेटवर्किंग पर अशोभनीय कमेंट करना, इंटरनेट पर धमकियॉ देना किसी का इस स्तर तक मजाक बनाना कि तंग हो जाए इंटरनेट पर दूसरों के सामने शर्मिदा करना, जिसे हम साइबर किलिंग कहते है। अक्सर बच्चे इसका शिकार होते है।

कम्प्यूटर सुरक्षा :–

- साइबर क्राइम कम्प्यूटर सुरक्षा का अर्थ कम्प्यूटर का सिस्टम को चोरी से रोकने और हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर की जानकारी को नुकसान होने से बचाने के साथ–साथ उसके सेवाओं के विघटन और गुमराह होने से बचाये।
- साइबर सुरक्षा में सर्किट के प्रोग्राम में प्रवेश के साथ–साथ उसमें क्षति हो सकता है कि नेटवर्क डेटा और कोडइजैक्शन से आते है और उसके सॉफ्टवेयर को गलत इस्तेमाल से भी हो सकता है।
- कम्प्यूटर सिस्टम और इंटरनेट वायरनेट नेटवर्क जैसे बलूक तथा वाई फाई पर बढ़ती जा सकती स्मार्ट उपकरणों का विकास जैसे स्माटफोन, टेलीविजन इत्यादि होते है।

आपके साथ सोशल मीडिया पर गलत व्यवहार हो सकता है। धोखाधड़ी का शिकार होते है ऐसे में आप संबंधित पेज का स्क्रीनशॉट लिंग डेट और टाइम आदि का सहेजकर रखें ताकि शिकायत के वक्त संबंधित अथॉरिटी को सबूत के रूप में दिया जा सकता है। जिससे अपराधी को पकड़ने में मदद मिलेगी । जिससे अपराध करने वाले के मन में खौफ बैठ सकें। बैंक फ्राड होने पर तुरंत बैंक के स्टम्प केयर में जानकारी दे या कार्ड ब्लाक किया जावें। हैकिंग और चोरी की ज्यादातर घटनाएं कम्प्यूटर के जरिये अंजाम दी जाती है। एंटी वायरस या फिर आप एप्पल जैसे ब्रांड लगाए। वाइयर हैकिंग से बच सकते है। सोशल मिडिया इंटरनेट प्रकाशन से अलग नहीं होता है। समाचार साइट, साहित्यिक गैर–कल्पना बच्चे महिलाएं आदि है। हालांकि अगर ऑफलाइन प्रकाशनों को समय–समय पर जारी किया जाता है।

सफलता का मूलमंत्र

मंदाकिनी साहू
बी.एस.सी द्वितीय वर्ष

सफलता को सरल शब्दों में किसी लक्ष्य को केन्द्रित करके बड़ी मेहनत से प्राप्त की गई उपलब्धि कह सकते है । सफलता को प्राप्त करने के लिए एक लक्ष्य, उसके प्रति समर्पण भावना कड़ी मेहनत और आत्म विश्वास आवश्यक है। यदि आपने एक लक्ष्य की पूर्ण आत्मविश्वास से निर्धारण कर लिया तो कड़ी मेहनत और उस लक्ष्य के प्रति समर्पण के बल बूते आप सफलता को प्राप्त कर लेंगे। आपका लक्ष्य जितना कठिन होगा, आपकी 'सफलता' भी उतनी ही बड़ी व शानदार होगी।

''सफलता'' को प्राप्त करने के लिए कम से कम एक दफा ''असफलता'' को देखना पड़ता है। ये वही शब्द है जो हमें सफल होने को मजबूर करता है। ये वही शब्द है जो हमें सफल होने को उकसाता है। 'सफलता' प्राप्त करना एक ऐसा जश्न है जो शायद कभी समाप्त नही होता निरंतर नये लक्ष्य के बनते ही इसका स्वाद चखने को मिलता है। ' सफलता' के विषय में कथन है कि – सफलता एक दिन में नही मिलती, लेकिन एक दिन जरूर मिलती है। बशर्ते आप उसे पाने का सतत् प्रयास करें। सफलता पूरी तरह मेहनत पर निर्भर करती है। यदि आपने मेहनत नहीं किया तो सफलता दूर दूर तक आपके पास नहीं आ सकती और आपने मेहनत किया तो चाह कर भी कोई आपसे सफलता को दूर नहीं कर सकता अर्थात् मेहनत ही सफलता की कुंजी है।

कड़ी मेहनत आत्म विश्वास लक्ष्य के प्रति समर्पण आपको एक सफल इंसान बनाता है।

सिर्फ दस खरब पेड़ चाहिए

गौरव पटवा
एम.एस.सी रसायन शास्त्र

वर्तमान जलवायु में आ रहा परिवर्तन बहुत सारी कुंशकाओं को जन्म देती, इस वाली जैव विविधता को बनाए रखने के लिए अब हमें आ पड़ी जरूरत दस खरब पेड़ों की, फिर अकेले ओजोन की इस परत में भी नही तो फिर कई कई छेद होंगे।

कॉर्बन से मुक्ति कैसे मिल सकेगी, ग्रीन हाऊस गैसों में कटौती करनी होगी लगभग अस्सी प्रतिशत कॉर्बन से मुक्ति कैसे मिल सकेगी बस यही अब उपाय शेष है।

लगाओं दस खरब पेड़ यही धरती काआदेश है । सोख सकेगे जो कि आठ सौ तीस अरब टन कॉर्बनडाइऑक्साइड आखिर 25 वर्ष के प्रदूषण का होता है कुछ मतलब जलवायु परिवर्तन से जैव विविधता मे आ रहे बदलाव जीव जंतु तो क्या मछलियां भी बदल रही अपना स्वभाव तो आइये हम ये बीड़ा उठाये और कम से कम दस पेड़ लगाये।

पेड़ सभ्यता की सुरक्षित और जागरूक मूरत है। हमारे देश के 10 प्रतिशत हिस्से में और पेड़ हो ये जरूरत है तभी तापमान स्थिर होगा । हमारी खुशियों का आगमन वैसा ही फिर होगा। हम भले ही कितने अनजान है पर सच मानिये वृक्ष हमारी ही संतान हैं, आज की एक कहावत है–

तभी मिल सकेगी (Co2) कॉर्बनडाइऑक्साइड से मुक्ति ।

हमें करनी होगी सही अर्थो में वन भक्ति।।

विज्ञान और हमारी परम्पराएँ

भारत के समाज मे अनादिकाल से चली आ रही लोक परम्पराओं में आज भी प्रकृति तथा विज्ञान के संरक्षक तथा उनके सम्मत होने के संकेत मिलते है। यह भी सर्वविदित सत्य है कि भारतीय लोक परम्परा मे विज्ञान और प्रौद्योगिकी को हमेशा से प्राथमिकता दी गई है ।

रामायण जैसे लोकव्यापी ग्रंथ मे अगर पुष्पक विमान है तो महाभारत मे मिसाइल जैसे अस्त्रों का उल्लेख है। अमरकोष ने शिल्प और विान की जानकारी को मोक्ष प्राप्ति का एक मार्ग माना है।

मोक्षेघी जनिम् विज्ञानं शिल्प शास्त्रोंरू।

श्रीमद् भागवत महापुराण मे गोवर्धन पर्वत पुजा का विशद वर्णन है। संदेश साफ है –पर्वतो को पुजेंगे तो वे संरक्षित रहेंगे उनकी परिक्रमा करो–यानि उनके प्राकृतिक स्वरूप से छेड़छाड़ मत करो।

पहाड़ियों के शीर्ष पर माता मंदिरों की प्रतिमा की परम्परा रही है ये पर्वत उन्हीं के नाम से जाने जाते है। पर्वत संरक्षित रहे तो विज्ञान की भाषा में डाउन स्ट्रीम की नदियाँ, नाले, खेत सुरक्षित रहेंगे व इको सिस्टम ठीक से काम करेगा।

चिंतन है विकास का रास्ता

हमें यह जानना चाहिए कि मानव को उसका मस्तिष्क एक अनोखा उपहार है। आप इसमें तभी प्रवेश कर सकते है जब आप में जिज्ञासा हो और चिंतन हो।

एक विद्यार्थी के रूप में आपके पास ऐसा मस्तिष्क हो जो मानव जीवन के प्रत्येक पहलु पर खोजबीन करें हम अकेले नहीं है, समस्त ब्रम्हांड हमारे लिए मित्रवत् है और जो लोग स्वप्न देखते है और कार्यवाही करते है उन्हें यह सर्वोत्तम देने की चेष्टा करता है। जिस तरह चंद्रशेखर सुब्रमण्यम ने ब्लैक होल की खोज की। आज हम चंद्रशेखर की सीमाओं का उपयोग कर यह गणना करते है कि सूरज कब निकलेगा, व कब तक चमकेगा।

जिस तरह सर सी.वी. रमन ने सागर की ओर देखा प्रश्न किया कि सागर का रंग नीला क्यों है, उन्होनें पाया कि सागर का रंग आण्विक प्रकीर्णन के कारण नीला है। इसे रमन प्रभाव नाम दिया गया ।

वक्त का बदलना

वक्त बदलता है जिन्दगी के साथ,
जिन्दगी बदलती है वक्त के साथ।
वक्त नहीं बदलता अपनों के साथ,
बस अपने बदलते है वक्त के साथ।।

वक्त के भी अजीब किस्से है, किसी के कटते नहीं
और किसी के पास होते नहीं।

वक्त दिखाई नहीं देता है,
पर बहुत कुछ दिखा देता है।

अपनापन तो हर कोई दिखाता है,
पर अपना कौन है ये वक्त दिखाता है।

वक्त बड़ा अजीब होता है,
इसके साथ चलो तो किस्मत बदल देता है।
और न चलो तो किस्मत ही बदल देता है।

अगर किसी को कुछ देना है,तो उसे अच्छा वक्त दो।
क्योंकि हर चीज,वापस ले सकते हो।
मगर किसी को दिया हुआ अच्छा वक्त,
वापस नहीं ले सकते।

वक्त सभी को मिलता है, जिन्दगी बदलने के लिए।
पर जिन्दगी दोबारा नहीं मिलती, वक्त बदलने के लिए।।

माधुरी चन्द्रवंशी
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

- सुविचार -

मंजिल चाहे कोई भी हो, यदि शिखर पर पहुंचना है तो इतना हौसला होना चाहिए कि उठना है, दौड़ना है, थकना है, गिरना है लेकिन रूकना नहीं है।

सर्वोत्तम बनने की इच्छाशक्ति

खोल दो पंख मेरा कहता है परिन्दा अभी और उड़ान बाकी है।
जमीं नहीं है मंजिल मेरी, अभी पूरा आसमान बाकी है।।

जिज्ञासा –

जीवन की शुरूआत हमारे रोने से होती है। जीवन में इतना अच्छा काम करो कि हमारे अंत समय में दूसरों को रोना आए। खुश रहने का मतलब यह नही कि सब कुछ ठीक है, इसका मतलब यह है कि आपने अपने दुखों से ऊपर उठकर जीना सीख लिया है। बिना कोई बहाना बनाएँ जिओ, बिना किसी अफसोस से प्रेम करो, जहाँ जीवन में रोने की सौ वजह होती है वही हँसने के हजार रास्ते भी है।

बेटियाँ

बेटियाँ शुभकामनाएँ है,
बेटियाँ पावन दुवाएँ है।
बेटियाँ जीनत हदीसों की,
बेटियाँ जातक कथाएँ हैं।
बेटियाँ गुरूग्रंथ की वाणी है,
बेटियाँ वैदिक रिचाएँ हैं।
इल्जाम नहीं शिकायत है माँ जो तुमसे करती है।
मुझे जन्म नहीं देना, ऐसी भी क्या मजबूरी है।
कुछ महीने में ही भरने वाली किलकारी थी,
तुम सबने मिलकर मारा, मैं ऐसे न मरने वाली थी।
बेटो की चाहत की आहुति में कोख में ही
कत्ल कर दी जाती है ''बेटियाँ''
यू जिन्दगी के सुख से
महरूम कर दी जाती है बेटियाँ
कलियों से नाजुक होती है बेटियाँ,
रोशन करेगा बेटा एक ही कुल को
दो–दो कुल की शान होती है बेटियाँ।

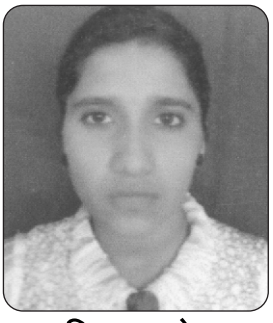

रखिता पटेल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

- सुविचार -

शिक्षक वह दीपक है जो स्वंय जलकर दुसरों को प्रकाशित करता है।

संतुष्टि

अनिल कुमार
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

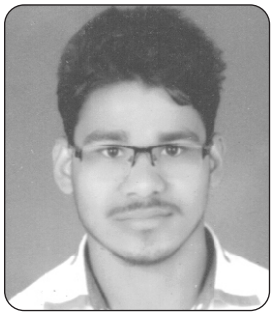

मरते वक्त इन महान लोगों ने दुनिया को कुछ ज्ञान की बात बताई।
अल्बर्ट आईंस्टीन – जो अपनी सदी के सबसे बड़े वैज्ञानिक थे।
सिकन्दर – जिन्होंने पूरी दुनिया जीत ली थी।
रविन्द्र नाथ टेगोर – जो महान साहित्यकार कवि थे।
एंड्रयू कार्नेगी – जो अपने समय में अमेरिका से सबसे अमीर व्यक्ति थे।

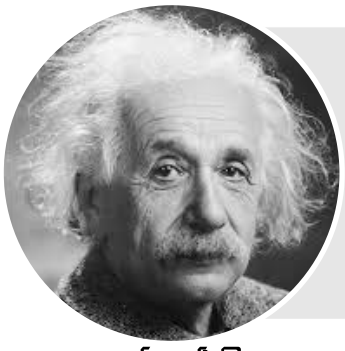

अल्बर्ट आईंस्टीन

इनके जैसाा लोकप्रिय वैज्ञानिक अब तक कोई नहीं है। मरने से कुछ दिनों पहले इन्होंने अपने प्रिय मित्र को एक पत्र लिखा था कि मैं अगले जन्म में वैज्ञानिक नहीं बनना चाहता हूँ। मुझे सबसे बड़ा अफसोस यह है कि हीरोसीमा और नागासाकी में परमाणु बम से चार लाख लोगों की मौत हुई। इसका जिम्मेदार केवल मैं हूँ क्योंकि परमाणु बम बनाने का फार्मुला मैंने ही दुनिया को दिया था। अगले जन्म मिले तो भगवान से विनती है कि मुझें एक साधारण जीवन ही देना। ये अपने इस कार्य से दुखी थे।

सिकन्दर के जैसा बड़ा योद्धा अब तक पूरे विश्व मे कोई नहीं हुआ। उन्होंने अपनी लड़ाई और बुद्धि के दम पर पूरी दुनिया जीत ली थी। जब पूरी दुनिया जीत कर वो यूनान जा रहे थे तब उन्हें लगा कि वे बीमार है मरने वाले है। सिकन्दर ने कहा कि मुझें पुर्णत: ठीक कर देगा उसे मै अपनी आधा साम्राज्य दे दुँगा। चिकित्सकों ने कहा इन्हें बचा पाना नामुमकिन है और अगले दिन उनकी मृत्यु हो गई। मृत्यु से पहले सिकन्दर की इच्छा थी कि शमशान ले जाते वक्त उनके दोनों हाथ अर्थी के बाहर खुले लटके रहने दिया जाए, लोगों को मेरे खाली हाथ दिखने चाहिए कि पूरी दुनियाँ जीतने वाला सिकन्दर भी मरते वक्त खाली हाथ जा रहा है।

सिकन्दर महान

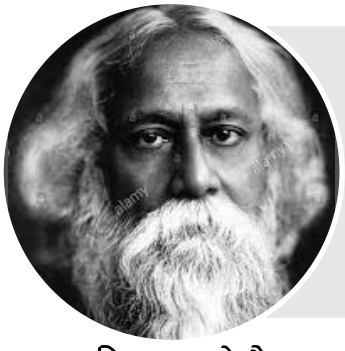

रविन्द्र नाथ टेगौर

जिन्हें बहुत सारे क्षेत्रों में महारत् हासिल थी जो एक बहुत बड़े संगीतकार व साहित्यकार थे। उन्होंने अपनी साहित्य कला से साहित्य का इतिहास ही बदल दिया। जब उनकी मृत्यु होने वाली थी उनके मित्र ने पूछा आप तो खुश होंगे कि आपने एक अच्छा जीवन जिया और आप अब खुश होकर दुनिया से जा रहे है, रविन्द्र जी ने कहा नहीं अभी तो मेंने कुछ नहीं किया है। अभी तक तो मैं बस प्रैक्टिस कर रहा था। दुनिया को असली कला तो मैं अब दिखाने वाला था लेकिन मेरे जाने का वक्त आ गया।

अब मुद्दे की बात यह है कि ये सभी अपने जीवन में अलग – अलग क्षेत्र में महारथी थे। सभी की कोई सानी नहीं थी, लेकिन मरते वक्त में अपने जीवन से संतुष्ट नहीं थे। मानव पूरा जीवन अपना सुख और शांति बाहर तलाशता है लेकिन वे कितना भी अचिव कर ले उन्हें खुशी नहीं मिलती, क्योंकि जिस सुख को वो बाहर तलाश करते है वो सुख उनके अन्दर ही होता है। जिन्हें वे कभी पहचान नही पाते है। आप अपने जीवन में कितने ही सफल हो जाये, लेकिन अगर आपके अन्दर मन की शांति और सुख नहीं है तो अपनी कामयाबी का कोई अर्थ नहीं है । जिसका मन हमेशा हर समय शांत रहता है, वही दुनिया में अच्छा जीवन व्यतीत कर पाता है।

जीवन का सत्य

उड़ती चिड़िया... बहता पानी...
इनकी कहानी... किसने जानी...
दुनियाँ वालो सुनो,
इसी को कहते है जिन्दगानी
उड़ती चिड़िया...
जीवन तो है एक...
रमता जोगी रे, भटकता जोगी
किसे पता किस की सा शाम
कल कहाँ होगी रे, कल कहाँ होगी
उड़ती चिड़िया...
बड़ा ही अजीब है ये
दुनियाँ का मेला रे,
करोड़ो की भीड़ मे है
हर कोई अकेला रे,
सुनने वालो सुनो?
ये है संतो की वाणी
उड़ती चिड़िया...
दुनियाँ के है,
बड़े टेढ़े–मेढ़े रास्ते
टेढ़े–मेढ़े रास्ते
ये तमाम रास्ते है,
हम सबके वास्ते,
चलने वाले सुनो
सफर में रखना सावधानी
उड़ती चिड़िया...
दुनियाँ वालो सुनो
इसी को कहते है जिन्दगानी
उड़ती चिड़िया...बहता पानी...
इनकी कहानी... किसने जानी...

अन्नपूर्णा चन्द्रवंशी
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

गंगा बहाव गीत

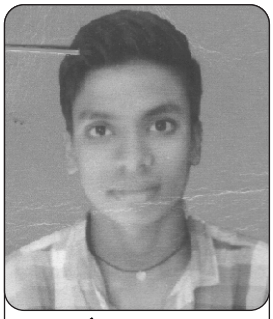

भूपेन्द्र साहू
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार
करे हाहाकार
नि:शब्द सदा
ओ गंगा तुम। गंगा बहती है क्यों ?
विस्तार है अपार...

नैतिकता नष्ट हुई मानवता भ्रष्ट हुई
निर्जल भाव से बहती हो क्यो ?
इतिहास की पुकार, करे हुंकार
ओ गंगा की धार, निर्बलजन को
सबल संग्रामी समग्रोगामी, बनाती नहीं हो क्यों ?
विस्तार है अपार...

अनपढ़जन, अक्षरहीन, अनगिनजन, खाद्यविहीन
वे नेत्रविहीन देख मौन हो क्यों ?
इतिहास की पुकार, करे हुंकार
ओ गंगा की धार, निर्बलजन को
सबल संग्रामी समग्रोगामी, बनाती नहीं हो क्यों ?
विस्तार है अपार...

व्यक्ति रहे व्यक्ति केन्द्रित सकल समाज, व्यक्तित्व रहित
निष्प्राण को तोड़ती नहीं हो क्यों ?
इतिहास की पुकार, करे हुंकार, ओ गंगा की धार
निर्बलजन को सबल संग्रामी, समग्रोगामी, बनाती नहीं हो क्यों ?
विस्तार है अपार...

स्त्रोतस्विनी क्यूं न रही तुम निश्चय, चेतनहीन
प्राणों में प्रेरणा देती न क्यूं ?
उन्मद अवनी, कुरूक्षेत्रवनी, गंगे जननी नवभारत में
भीष्मरूपीसुत समरजयी, जनती नहीं हो क्यों ?
विस्तार है अपार...

- सुविचार -

शिक्षक की सर्वोच्च कला रचनात्मक अभिव्यक्ति और ज्ञान में प्रसन्नता जगाना है।

अल्बर्ट आइन्सटीन

अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुन्दर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो मेरा दृढतापूर्वक मानना है, कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते है पिता, माता और गुरू।

अब्दुल कलाम

मैं जीने के लिए अपने पिता का ऋणी हूं पर अच्छे से जीने के लिए अपने गुरू का।

एलेक्जेंडर द ग्रेट

चीजों के प्रकाश में आगे बढ़ो प्रकृति को अपना शिक्षक बनने दो।

विलियम वर्डसोर्थ

"मित्रों में सबसे शांत और स्थायी मित्र सलाहकारों में सबसे सुलभ और बुद्धिमान सलाहकार और शिक्षकों में सबसे धैर्यवान शिक्षक किताबें होती है।"

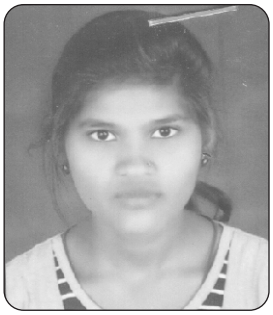

अनीता चन्द्रवंशी
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

सफलता

बड़ते है आगे वो, जो जगाते है सूरज को। रह जाते है पिछे जिनको सूरज जगाता है।

करो कुछ भी अपने जीवन में चाहे वो छोटे से भी छोटा काम हो बस जरूरत एक ही चीज की है जिसमें आप अपना पूरा 100 प्रतिशत दो फिर देखना वो छोटा सा काम जब तुम्हारे नाम के पीछे आयेगा तो बहुत बड़ा लगने लगेगा और आपकी सफलता की सीढ़ी बन जायेगी।

हमेशा अपने आप पे विश्वास रखना यें याद रखना कि जो आप चाहते हो वो हासिल कर सको क्योंकि एक चरखा चलाने वाला मामूली इन्सान अगर इस देश को आजाद करा सकता है तो आप अपने जीवन में कुछ अलग हटकर नहीं कर सकते ? काबिल बनों सफलता तो मिल ही जायेगी। हमेशा अपने जीवन में सोचकर ही कुछ करते हो लेकिन अभी आपने ये सोचा है जो कर रहे है उसे सोचें।

अंतिम में यही बोलना कहना जिन्दगी की असली उड़ान तो बाकी है मेरे दोस्तों आपके इरादों का इम्तिहान अभी बाकी है। मुठ्ठी भर जमीन हीं तो नापीं है। नापना पूरा आसमान अभी बाकी है।

''अपना पूरा 100 प्रतिशत दो, सफलता झक मारकर पीछे आयेगी।''

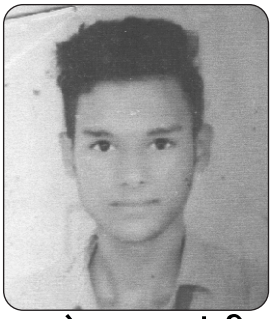

राकेश चन्द्रवंशी
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

सफलता की सीढ़ी का रास्ता...

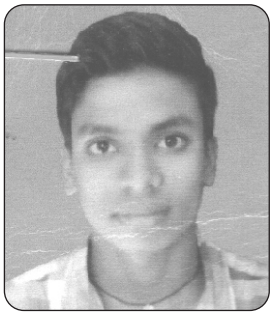

भूपेन्द्र साहू
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

मैं अत्यंत हर्ष के साथ में आप सभी छात्र एवं छात्राओं को बताना चाहूँगा कि हमारे अटल बिहारी बाजपेयी शासकीय महाविद्यालय पाण्डातराई में अनुशासन एवं स्वच्छता की कोई कमी नहीं है, यहां तक कि इस स्तर पर जो बोलियाँ या भाषा बोली जाती है वह बहुत ही प्रेमपूर्वक एवं मन को मोहित करने वाली भाषा होती है। इस पाण्डातराई कॉलेज की जो रौनक है वह बहुत ही सुंदर एवं देखने योग्य है जो कि इस आस–पास के कॉलेज में नही है हमारे यहाँ की मातृभूमि पर खड़े होने पर ऐसा लगता है जैसा कि मैं माँ की गोद में बैठा हूँ। यहां कि भूमि पर वही लोग बैठ या खड़े हो पाते जो मां की सच्ची सेवा करता हो पिता का हर सुख–दुख में हाथ बटाता हो, गुरूओं के सामने शिष्टाचार से पेश आता हो, या बात करता हो। हमारे पाण्डातराई महाविद्यालय की पावन धरा में भगवान की कृपा माँ, बाप की कृपा तथा गुरूओं का आशीर्वाद से आज यहां छात्र एवं छात्राओं को कोई भी प्रकार की कठिनाई महसूस नहीं होती है।

हर विद्यार्थी चाहता है कि शिक्षकों से मेरा पहचान अच्छा से हो लेकिन ऐसा नहीं हो पाता जो, उसके प्रश्नों का जवाब देता हो, शिष्टाचार के साथ बात करता हो, अपने अंदर की हर सुख–दुख को बताता हो प्रत्येक प्रतियोगिता में भाग लेता हो, नाट्य करता हो, गाना गाता हो एवं कभी एक दुसरे के प्रति भेदभाव एवं कपट की भावना ना रखता हो तभी शिक्षकगण उन्हे अच्छे से पहचानते है। इसलिए साथियों आगे बढ़ने के लिए हमें काँटो से चलना पड़े तो चलना चाहिए क्योंकि सच्चा कर्म करने वाले व्यक्ति निष्ठापूर्वक तन, मन, धन से काम करे तो वह भविष्य में कभी भी पीछे नहीं हो सकता। प्यारे भाइयों एवं बहनों हमें कर्म करते रहना चाहिए क्योंकि कर्म ही हमारे भाग्य का निर्माणकरेगा, अगर हमें आगे बढ़ने के लिए मर–मिटना पड़े तो हमें पीछे नहीं हटना चाहिए अर्थात् हे! गुरूदेव, हे शिक्षक गण आप सभी विद्यार्थी के ऊपर कृपा बनाये रखना क्योंकि आज की दुनिया में किसी व्यक्ति का आचरण हाव–भाव, व्यवहार एवं उसके 'कर्म' एवं 'ज्ञान' को देखकर ही पहचाना जा सकता है। तथापि बिना कर्म के व्यक्ति को फल की प्राप्ति नही हो सकती । उसी प्रकार बिना परिश्रम किये बिना न तो गुरू की प्राप्ति, न तो ज्ञान की प्राप्ति और न ही धन की प्राप्ति हो सकती है वैसे ही जैसे पानी के बिना बादल और बादल के बिना पानी जीवन अधूरा रहता है, उसी प्रकार गुरू बिना शिष्य और शिष्य बिना गुरू के जीवन अधूरा रहता हैं। इसलिए मेरे देश के समस्त नागरिकों, भाइयों एवं बहनों उठो, जागो, चलते रहो जब तक मंजिल ना मिले जाये ।

प्रेरक प्रसंग -

कोयले का टुकड़ा

संस्कृति गुप्ता
बी.एस.सी. प्रथमवर्ष

हम रोज अपने दैनिक कार्यो में व्यस्त रहते है। सुबह उठने से लेकर रात सोने तक इस तरह ऐसा कुछ न कुछ सबके जीवन में आता है। जिससे हम प्रभावित होते है और वह हमारे जीवन का प्रेरणास्त्रोत बन जाता है।

उम्मीद है जो कहानी मैं आपसे साझा करने वाली हूँ वो मेरे आपके और आने वाली पीढ़ी के लिए काफी कारगर और प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

इस कहानी का शीर्षक है ''कोयले का टुकड़ा''

एक बार की बात है, अमित जो कि एक मध्यम वर्गीय परिवार का लड़का था। वह बचपन से ही बड़ा आज्ञाकारी व मेहनती था लेकिन कुछ समय से उसका व्यवहार बदलने लगा था । वह न तो माँ–बाप की सुनता था। यहाँ तक की घर वालो से झूठ बोलकर पैसा भी लेने लगा था। अमित का बदला हुआ आचरण सभी के लिए चिंता का विषय बन गया था।

जब इस बदलाव की वजह जानने की कोशिश की गई तो पता चला कि अमित बुरी संगत में पड़ गया है और उसके कुछ ऐसे मित्र बन गये है जो फिजुलखर्ची, सिनेमा देखना और धुम्रपान करने के आदी है पता चलते ही सभी घरवालों ने अमित की ऐसी दोस्ती छोड़कर, पढ़ाई–लिखाई और अच्छी आदतों पर ध्याान देने को कहा–परन्तु इन बातों का अमित पर कोई असर नहीं पड़ा परिणाम स्वरूप अमित अपनी कक्षा में फेल हो गया। हमेशा अच्छे नम्बरों से पास होने वाले अमित के लिए किसी जोरदार झटके से कम नही था । वह बिलकुल टुट गया अब वह न तो घर से निकलता और न किसी से मिलता था, न बात करता था। उसकी यह दशा देख परिवारजन और चिंता करने लग गये।

जब यह बात अमित के पिछले स्कूल के प्राचार्य को पता चला तो उन्हें विश्वास नहीं हुआ और उन्हें बहुत दुःख हुआ और उन्होंने निश्चय किया कि वे अमित को इस स्थिति से निश्चित ही उबारेंगे।

इस प्रयोजन से एक दिन उन्होंने अमित को अपने घर बुलाया उस समय प्राचार्य जी अपने घर के बाहर बैठे अंगीठी ताप रहे थे। दस–पंद्रह मिनट ऐसे ही बीत गए फिर अचानक प्राचार्य जी उठे और चिमटे से कोयले के एक घधकते हुए टुकड़ै को उन्होंने मिट्टी में रख दिया वह टुकड़ा कुछ तो गर्मी देता रहा, पर अंततः ठंडा पड गया।

यह देखा अमित कुछ उत्सुकतावश बोला–प्राचार्य जी आपने कोयले के टुकड़े को मिट्टी में क्यों डाल दिया ऐसे में तो ये बेकार हो गया। अगर आप उसे अंगीठी में ही रहने देते तो अन्य टुकड़ों की तरह वह भी गर्मी देने का काम आता। प्राचार्य जी मुस्कुराये और बोले–बेटा कुछ देर अंगीठी से बाहर रहने से बेकार नहीं हुआ लो उसे उठाकर दुबारा अंगीठी में डाल देता हूं और ऐसा कहते हुए उन्होंने टुकड़े को अंगीठी में ड़ाल दिया। टुकड़ा फिर से घधकने लगा और पहले जैसे ही गर्मी प्रदान करने लगा। तब प्राचार्य जी ने कहा – कुछ समझे अमित, तुम भी उस कोयले के टुकड़े के समान ही हो, पहले जब तुम अच्छे संगति में रहते थे तो मेहनत करते थे। माता–पिता का कहना मानते थे और अच्छे नम्बरों से पास होते थे, पर जैसे ही वो टुकड़ा मिट्टी में चला गया बुझ गया उसी प्रकार तुम भी गलत संगति में पड़ गये और फेल हो गये। ठीक उसी तरह तुम भी वापस अच्छी संगति में जाकर मेहनत कर एक बार फिर मेघावी छात्र की श्रेणी में आ सकते हो।

याद रखो मनुष्य ईश्वर की बनाई हुई सर्वश्रेष्ठ कृति है। उसके अंदर बड़ी से बड़ी हार को जीत में बदलने की ताकत है उस ताकत को पहचानो और इस जीवन को सार्थक बनाओ। अब अमित समझ चुका था कि उसे क्या करना है। वह चुपचाप प्राचार्य जी के चरण स्पर्श कर निकल पड़ा अपना भविष्य बनाने।

घुट-घुटकर जीना छोड़ दें

घुट–घुटकर जीना छोड़ दे
तु रूख हवाओं का मोड़ दे
हिम्मत की अपनी कलम उठा
लोगों के भरम को तोड़ दे
तु छोड़ ये आंसू उठ हो खड़ा
मंजिल की ओर अब कदम बढ़ा
हासिल कर इक मुकाम नया
पन्ना इतिहास मे जोड़ दे
तु रूख हवाओं का मोड़ दे।

उठना है तुझे नही गिरना है,
जो गिरा तो फिर से उठना है
अब रूकना नही इक पल तुमकों
बस हर पल आगे बढ़ना है,
राहों मे मिलेंगे तुफान कई
मुश्किलों के होंगे वार कई
इन सबसे तुझे न डरना है
तु लक्ष्य पे अपने जोर दे
घुट–घुटकर जीना छोड़ दे
तु रूख हवाओं का मोड़ दे।

चल रास्ते तु अपने बना
छू लेना अब तु आसमान
धरती पर रखना तु कदम
बनाना है अपना ये जहाँ
किसी के रोके न रूक जाना तू
लकीरे किस्मत की खूद बनाना तू
कर मंजिल अपनी तू फतह
कामयाबी के निशान छोड़ दे
घुट–घुटकर जीना छोड़ दे
तु रूख हवाओं का मोड़ दे
हिम्मत की अपनी कलम उठा
लोगों के भरम को तोड़ दे।

भारती मिश्रा
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

सादा जीवन उच्च विचार

लक्ष्मीन चन्द्रवंशी
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे। उनका जन्म 3 दिसम्बर 1884 को हुआ था। वे सरल स्वभाव के अनुशासन प्रिय और कम बोलने वाले थे। उनमें आत्मविश्वास, ईमानदारी और सच्चाई जैसे गुण थे। वे पढ़ने में होशियार थे उनका मानना था कि विद्यार्थी को मन लगाकर पढ़ना चाहिए। इससे नींव मजबूत होती है।

एक बार राजेन्द्र प्रसाद को मलेरिया हो गया सभी ने उन्हें परीक्षा न देने की सलाह दी मगर उन्हें अपने आप पर पूरा भरोसा था। वे बोले–मैंने सालभर जो भी पढ़ा है, उसी के सहारे परीक्षा दूँगा और प्रथम भी आऊँगा। उन्होंने परीक्षा दी और सारे पर्चे अच्छी तरह से दिए। जब परीक्षाफल आया तो उसमें राजेन्द्र प्रसाद का नाम नहीं था राजेन्द्र प्रसाद विश्वास से बोले मैंने मेहनत की है, मैं कभी असफल नहीं हो सकता।

उनके शिक्षक ने उन्हें डाँटा और चुप बैठने को कहा मगर वे न माने। शिक्षक ने उन पर पांच रूपये जुर्माना किया। राजेन्द्र प्रसाद अपनी बात पर अड़े रहें, जुर्माना बढ़ते–बढ़ते पचाय रूपये तक पहुंच गया। विद्यालय में हलचल बढ़ गई बात प्राचार्य तक पहुंचा तब पता चला कि भूलवश उत्तीर्ण छात्रों की सूची में उनका नाम छपने से रह गया था वे न केवल उत्तीर्ण हुए बल्कि कक्षा में प्रथम भी आया। ऐसा था उनका आत्मविश्वास।

वे भारतीय वेशभूषा का आदर करते थे। जब उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज में दाखिला लिया तो वे धोती–कुर्ता पहनकर गए। यह देखकर सारे छात्रों ने उनका मजाक उड़ाया। जब यह मालूम पड़ा कि ये राजेन्द्र प्रसाद हैं तो सबके चेहरे उतर गए। जिसको वे लड़के गंवार समझ रहे थे वे कॉलेज में प्रथम आए इसके बाद किसी ने उनकी सादगी और वेशभूषा का मजाक नहीं उड़ाया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आगे जाकर भारत के पहले राष्ट्रपति बने।

तू मानव है...

तू मानव है, मानव जैसी बात कर
जीवन अस्त–व्यस्त नही, त्रस्त हो रहा
हे मानव ! तुझको क्या हो रहा ?
अपने ही घर को फूंक–फूंक तू
क्यों बाहुबल पर अपने झूम रहा ?

दानव सा न व्यवहार कर
तू मानव, मानव जैसी बात कर
अब निज स्वार्थ को त्याग दे
मानव है, मानवता का राग दे

लठ्ठ, दुनाली, चाकू, फरसा
अब तो हथियारों को त्याग दे
मानवता को न शर्मशार कर
तू मानव है, मानव जैसी बात कर

प्यार मोहब्बत की फिर से बात कर
मानव है, मानव ही अपनी जात कर
आरक्षण की आग में न जल, न जला
चल उठ फिर से सबकुछ आबाद कर
प्राणी मात्र से प्यार कर
तू मानव है, मानव जैसी बात कर...

ओमप्रकाश
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

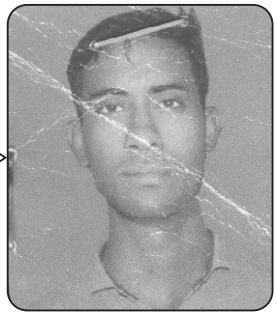

मेरे जीवन का लक्ष्य

पुष्पा साहू
बी.ए. तृतीय वर्ष

सभी मनुष्यों का अपने जीवन में कोई न कोई लक्ष्य अवश्य होता है। जीवन के आरंभ के दिनों में अर्थात् अपने बचपन में हर व्यक्ति यह अवश्य सोचता है कि बड़ा होकर वह क्या बनना पसंद करेगा। मेरे जीवन का लक्ष्य है बड़ा होकर एक अच्छा शिक्षक बनना।

जीवन का कोई न कोई लक्ष्य अवश्य होना चाहिए। यदि लक्ष्य नहीं है तो हमारा जीवन दिशाहीन हो जाएगा। मैं सदा ही यह सोचता हूं कि यदि समाज में अच्छे शिक्षक न हो तो यह समूचा समाज और सारी दुनिया ही दिशाहीन हो जायेगी।

शिक्षक को दुनिया में सबसे ऊँचा स्थान दिया जाना चाहिए क्योंकि शिक्षक ही हमारा आचरण संवारते हैं और हमें जीवन के अच्छे–बुरे का ज्ञान देकर हमें सुखी बनाने का प्रयत्न करते है। मेरा विश्वास है कि अच्छे शिक्षक के अभाव के कारण ही समूचे संसार में नाना प्रकार के कष्ट और अनेक प्रकार की समस्याएँ फैली हुई हैं इसलिए मैं डॉक्टर, इंजीनियर, नेता या अधिकारी बनने के स्थान पर शिक्षक बनने की इच्छा अपने मन में संजोकर रखी हूँ।

भले ही अच्छा शिक्षक बनना मेरे जीवन का लक्ष्य है किन्तु यह कुछ और बनने से अधिक कठिन कार्य है। अच्छा शिक्षक बनने के लिए केवल ऊँची शिक्षा पाना ही जरूरी नहीं है बल्कि इसके लिए चाहिए कि हम साहसी तथा उच्च नैतिक आचरण वाला तथा ऊँचे विचारों वाले व्यक्ति बनें।

तभी हम अपने विद्यार्थियों को यह सब गुण दे सकेंगे। अच्छा अध्यापक बनने के लिए हमें व्यवसायिक विचार छोड़ने होंगे और समर्पण भाव से देश के भावी नागरिकों के मन और शरीर के विकास में योगदान करना होगा।

इन सभी प्रयत्नों से में एक अच्छा शिक्षक बनने में सफल हो सकता हूँ और देश तथा विश्व को अनेक प्रकार से मुक्त कर सकती हूँ।

ज्ञान-ध्यान-भक्ति-कर्म

विधि और निषेध के प्रवक्ता का नाम ज्ञान है।

ज्ञान का पर्यायवाची शास्त्रीय शब्द विद्वान है।।

बुद्धि के विकारो से निवृत्ति हेतु अनीमा है।

इसका प्रयोग नियमित प्रभाव भले धीमा है।।

शास्त्र पठन, संत से श्रवण, मन का मनन।

वासना का दमन, निज में रमन भी ज्ञान है।।

सत्य असत्य का अन्तर का बोध कराता ज्ञान है।

शरीर और शरीरी का भेद दर्शाता ज्ञान है।।

धर्मशास्त्र में पुनीत वर्णित चिन्तन ध्याान है।

ध्यान में मिलन, होती निजता की पहचान है।।

विस्मृत श्रुति को पुनः स्मृति में लाना भी ध्यान है।

खुदा की याद में खुद का खो जाना ही ध्यान है।।

भक्ति की शक्ति और महिमा की न कोई सीमा है।

भय भाव से मुक्त कराने का निःशुल्क बीमा है।।

प्रेम रस से सनी भक्ति का विचित्र जलवा है।

जिसे मिले तृप्त करे, भक्ति आध्यात्मिक हलवा है।।

कर्म का क्षेत्र महान विस्तृत, अनुठा मर्म है।

पुण्य पाप की परिधि में बंधा कर्म ही धर्म है।।

कर्म भाग्य बनकर, मानुष तन दिलाता है।

कर्मो के अनुसार ही विधाता सृष्टि रचाता है।।

आजाद की दृढ़ता

चन्द्रशेखर आजाद के क्रांतिकारी दल के सदस्यों ने सशस्त्र क्रांति का बिगुल बजाकर ब्रिटिश शासन को हिलाकर रख दिया था। काकोरी रेलवे स्टेशन पर ट्रेन से सरकारी खजाना लूट लिए जाने की घटना से अंग्रेज अफसर क्रांतिकारियों से खौफ खाने लगे थे। हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र संघ के सदस्यों में सुखदेव, राजगुरू आदि फांसी की सजा पाकर लाहौर की जेल में बन्द थे। वर्ष 1931 में कांग्रेस नेताओं के जेल से छुटने पर आशा बँधी थी कि शायद कांग्रेस और अंग्रेज सरकार के बीच कोई समझौता हो जाये। एक दिन आजाद अचानक पं. जवाहर लाल नेहरू जी से मिलने आनन्द भवन जा पहुँचे। उन्होंने नेहरू जी से पूछा – अगर आपका समझौता हो गया तो भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू आदि क्रांतिकारियों का क्या होगा जो फांसी पर चढ़ाए जाने की प्रतीक्षा कर रहे है ?

नेहरू जी द्वारा अपने साथियों को फांसी से बचाने में असमर्थता प्रकट करते ही आजाद निराश होकर लौट गए। उन्होंने यशपाल आदि क्रांतिकारी साथियों से कहा–मैं भगतसिंह को फांसी के फंदे से बचाने में सफल नहीं हो पाया। अब एक दिन मैं भी अंग्रेजों से लड़ता हुआ प्राण गवाँ दूँगा। उसके कुछ ही दिन बाद 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस के साथ संघर्ष करते हुए वह शहीद हो गए।

नेहा पाण्डेय
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

हौसला बुलंद कर

हौसला बुलंद कर रास्तो पर चल दे।
तुझे तेरा मुकाम मिल जायेगा अकेला
तु पहल कर काफिला खुद बन जायेगा।।

मायूस होकर ना उम्मीदों का दामन छोड़
वरना खुदा नाराज हो जायेगा,
ठोकरों से न तू घबरा हर पड़ाव पर
अपने आप को और मजबूत पायेगा।।

ना कामयाबी की धुंध से घबराना,
कामयाबी का सूरज तेरी तकदीर
रोशन कर जायेगा।

साधना साहू
बी.ए. तृतीय वर्ष

एक कविता हर माँ के नाम

घुटनो से रेंगते – रेंगते
कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ।
काला टीका दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मै हूँ हर जगह,
प्यार ये तेरा कैसा है।
सीधा–साधा, भोला–भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
'माँ' मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

पूनम जायसवाल
बी.एस.सी, तृतीय वर्ष

समय का महत्व

मधु चन्द्रवंशी
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। समय सभी वस्तुओं से यहाँ तक कि धन से भी अधिक शक्तिशाली और अमूल्य वस्तु है यदि एक बार ये हमारे हाथों से निकल गया तो फिर यह वापस लौटकर नहीं आता है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार –

''एक समय में एक काम करो और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमें डाल दो और बाकी सब कुछ भूल जाओ।''

समय है तो मान लो जीवन है और समय नहीं तो जीवन भी नहीं समय को वापस नहीं किया जा सकता और ना खोया हुआ समय को वापस पाया जा सकता है। इसलिए हर व्यक्ति को समय का उपयोग सही ढ़ंग से करना चाहिए।
''अब पछताएँ होत क्या, जब चिड़िया चूग गई खेत।

इस प्रकार हर बुद्धिमान व्यक्ति समय के महत्व को समझता हैं । हमारा जीवन समय से जुड़ा हैं। उसमें एक पल की वृद्धि होना असंभव है, समय के सदुपयोग से ही मनुष्य निर्धन, निर्बल, अमीर, मूर्ख सबल बन जाता है। परन्तु समय ही मनुष्य को उसकी विद्वान और उसके असली पहचान प्रदान करता है।

'' अगर लगने लगे कि लक्ष्य हासिल नहीं हो पाएगा तो लक्ष्य नहीं अपने प्रयासों को बदलो।''

भारतीय नारी

पूनम जायसवाल
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।

जयशंकर प्रसाद ने अपनी अमर कृति "कामायानी" में बहुत पहले ही नारी की महत्ता को पुरूषों के जीवन के लिए अति आवश्यक बताया है। भारतीय नारी श्रद्धा, दया, ममता, मधुरता और गहरे विश्वास से युक्त है। वह स्वभावत: देवी है। दु:खियों पर दया करना अपनी मधुरता से घर परिवार को सरस रखना अपने विश्वास को पति पर अर्पित करके जन्म जन्मान्तर तक पूजा करना, ये ही भारतीय नारी के लक्षण है। इन्हीं गुणों के कारण वह हमेशा हमारे सम्मान की पात्र रही है।
प्राचीन काल में नारी – ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।''

जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। वैदिक काल में धार्मिक अनुष्ठान में नारी की उपस्थिति अनिवार्य थी। कोई भी क्षेत्र नारी के लिए प्रतिबंधित नहीं था। युद्ध स्थल में नारी ने अपनी वीरता का प्रदर्शन किया। अपने पति को युद्ध क्षेत्र में खुशी से भेज देती थी। आरती उतारकर रण क्षेत्र में भेजना, रण में कायरता न दिखाने का संदेश देना और रण में पति के मारे जाने पर दु:ख प्रकट न करना ये उनकी वीरता का परिचायक था । पति को वीरगति पाने पर वे कहा करती थी–

भल्ला हुआ जो मारिया, बहिणी म्हारा कंतु।
लज्जेजंतु वयस्सयहु जई भग्गा घर एंजु।।

पीठ दिखाकर अर्थात् युद्ध क्षेत्र में कायरता प्रदर्शित करने वाले पति को उस समय की नारी डरपोक पति की संज्ञा देती थी, लेकिन युद्ध में वीरगति प्राप्त करने वाले पति के लिए दु:ख प्रकट न कर वीर क्षत्राणी का परिचय देते हुए गौरव का अनुभव करती थी।

भारत में मुस्लिमों के आक्रमण ने नारी के सम्मान को धूमिल किया। यह भोगविलास की सामग्री बन गई। सुरक्षा के लिए इस युग में अहिल्याबाई, पद्मिनी, दुर्गावती ने अपने जौहर दिखाकर भारतीय नारियों को बलिदानी भाव का संदेश दिया। 1857 ई. में स्वतंत्रता संग्राम में अपने आपको झोंक कर रानी लक्ष्मीबाई ने नारी हृदय को कुंठित भावनाओं की ऊपर उठने हेतु आक्रोशित किया।

आधुनिक नारी – सारे झंझावातो से जूझते हुए भी आज की नारी अपनी मर्यादा लज्जा और सम्मान को सुरक्षित रखी हुई हैं जो विश्व में अपनी अलग पहचान बनाएं हुए हैं। आज वह 'लज्जा की गुड़िया' नहीं बल्कि पुरूष की सहयोगिनी, जीवन संगिनी और सहधर्मिणी हैं । वह अपने घर और समाज के लिए सदा समर्पण करने को तत्पर रहती हैं।

आधुनिक युग की नारी पाश्चात्य सभ्यता में घुलती नजर आ रही हैं। वह अपने कर्तव्यों से विमुख होती प्रतीत हो रही हैं। जिसके कारण पारिवारिक विघटन भी होने लगा हैं। फिर भी वर्तमान काल में भारतीय नारी सभी क्षेत्रों में पुरूषों को चुनौती दे रही है। चिकित्सा, शिक्षा, राजनीति एवं सेवा के क्षेत्र में वह बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही है। नारी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हो, शिक्षित हो, पुरूष की दासता से मुक्त हो, यह अच्छी बात है किन्तु स्वतंत्रता का अतिरेक न पुरूष के लिए शुभ है और न नारी के लिए। पुलिस और प्रशासन जैसे कठोर कर्मो में भी वह अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर रही है। वह कुशल वायुयान चालिका, सैनिक, वक्ता, प्रवक्ता और मेधावी व्यवसायी भी सिद्ध हो चुकी हैं।

''नारी शिक्षा ही समाज का विकास हैं, जीवन के हर क्षेत्रों में नारियों से,
विचार विमर्श आवश्यक है, जिसके लिए उनका शिक्षित होना जरूरी है।

–स्वामी दयानंद सरस्वती

जीत पक्की

तू रोकने की कोशिश तो करना मुझें, मैं बताऊँगा कि तूफान क्या होता है।
तु तोड़ने की कोशिश तो करना मुझें, मैं बताऊँगा की चट्टान क्या होता है।
तु जहाँ ले जाने की कोशिश तो करना मुझें, मैं बताऊँगा की किनारा क्या होता है।
जब तू मुझें तोड़–तोड़कर थक जाएगा, तब भी तू मेरी तलहटी में उगें किसी पेड़ के नीचे ही आराम करेंगा।

मेरे होने से दुनिया है, दुनिया के होने से मैं नहीं, जब तू मुझें बहा–बहाकर थक जाएगा।
तब भी तू मेरे बीच में ही रहेगा, क्योंकि भले तू समंदर है, लेकिन मैं भी किनारा हूँ।
और तुझें हमेशा किनारे के दायरे में ही रहना है, तू करना चाहे बदनाम तो करना मुझें,
मैं बताऊँगा कि सच्चाई क्या होती है, तू सवाल करना मेरे चरित्र पे, मैं बताऊँगा कि विश्वास क्या होता है।

कोई नहीं है मेरे साथ आज अकेला चल रहा हूँ, सुनसान सफर में, जो स्वार्थ के लिए जुड़े थे, वो कब के पीछे छुट गए।
तू मुझें अकेला छोड़ने की कोशिश करना, मैं बताऊँगा कि अकेले ये काफिला कैसे बनाया जाता है।
तू अंधेरे में छोड़ देना मुझें, मैं बताऊँगा कि अंजान जुगनुओं को कैसे दोस्त बनाते है।

अकेला हूँ, कमजोर नही, अकेला हूँ भटका नहीं, अकेला हूँ पर कोई स्वार्थ नहीं हैं।
अकेला हूँ पर मंजिल के रास्ते पर हूँ, पर हिम्मत बहुत है।
अकेला हूँ पर इरादे नेक है, अकेला हूँ पर खुद के निर्णय पर गर्व है।
अकेला हूँ पर चल रहा हूँ और कोई परीक्षा है वो भी लेकर देखना।

जवाब दूँगा हर एक इम्तहान का
तू सुनते–सुनते थक जाएगा मेरे रास्ते पर पहाड़ खड़े करने वाले।
तुम मुझें नहीं रोक पाओगे क्योंकि
सितारों तक चढ़ने की हिम्मत रखने वाले किसी पहाड़ से नहीं डरते।
और उंगली उठानी है तो उठा के देखना, किसी दिन मेरी सच्चाई के सामने,
तू खुद झुक जायेगा, बस थोड़ी देर ही तो लगेगी।

बस मुझें अपनी नींदो को तो कुर्बान करनी है।
बस मुझें थोड़ा पसीने में ही तो नहाना है।
अगर मैं गिर भी गया चलते–चलते, तो लोग मुझें कायर नहीं हिम्मती कहेंगे।
मेरी भावनाओं को डर नहीं जूनून कहेंगे, मैं भले ही काला हूँ
पर मुझमें अब और रंग नहीं चढ़ेगा, तुमने मुझसे बहुत सवाल किये।

अब मैं उनके जवाब दूँगा, किसी के सच्चा साथ पाने की उम्मीद कब की छोड़ दी है मैंने।
किसी से वफा की उम्मीद भी कबसे छोड़ दी है मैंने
दुनिया में आकर मैंने जिंदगी जीने के रास्ते पर जोड़ दी है।
और आखिरी बार कह रहा हूँ कि मैं सच्चा था,

मेरे इरादे नेक थे, मैंने कभी किसी का बुरा नहीं चाहा,
मैंने कभी किसी से बेवफाई नहीं की, पर तेरी आदत गंदी है
तू अब भी नहीं समझेगा तो अब मैं — सिर्फ काम करूँगा
अकेला लडूंगा, अकेला हारूंगा, लेकिन एक दिन
मेरी जीत होना तय है।
देश में मेरा नही बल्कि दुनिया में देश का नाम रौशन करूंगा।

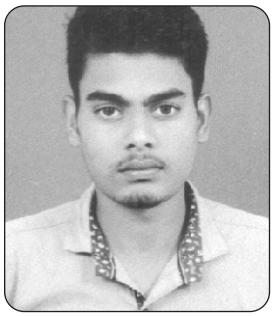

मणिशंकर
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

आर्ट्स के क्षेत्र में उड़ान

शिवरानी चन्द्रवंशी
एम.ए. हिन्दी साहित्य

''पवित्रता धैर्य और उद्यम— ये तीनों गुण मैं एक साथ चाहती हूँ।

आर्ट्स यानि कला और कला की कोई सीमा नहीं। यही कारण है कि इस फील्ड के छात्र–छात्राओं के पास संभावनाएं भी अपार हैं। इस फील्ड में करियर के ढ़ेरों ऑप्शन मौजूद है जो आपके लिए काफी फायदेमंद साबित हो सकती है। आर्ट्स के बारे में मिथक है कि ये अच्छा कैरियर विकल्प नहीं है आर्ट्स स्ट्रीम में कैरियर के विकल्प बहुत ही अच्छे होने के साथ संतोषजनक भी है।

Bachalor of Arts (BA) : आप बारहवीं के बाद आर्ट्स से स्नातक की डिग्री ले सकते है। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी 12 वीं के बाद आप एस.एस.सी, रेलवे, सेना जैसी परीक्षा दे सकते है।

<u>भारतीय या राज्य प्रशासनिक सेवा –</u>

भारतीय प्रशासनिक या पुलिस सेवा (यूपीएससी) एस.एस.सी या पी.एस.सी की परीक्षा पास करने के लिए विशेषज्ञ स्नातक आर्ट्स विषय लेकर करने की सलाह देते है, क्योंकि प्रशासनिक सेवा परीक्षा में जो प्रश्न पूछे जाते है। उनमें अधिकांश आर्ट्स विषय के होते है। इस परीक्षा में बैठने के लिए स्नातक की पढ़ाई के साथ–साथ तैयारी शुरू कर दे। समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र, इतिहास व लिटरेचर जैसे विषयों की पढ़ाई के साथ आप इस दिशा में आगे बढ़ सकते है।

टीचरशिप, प्रोफेसरशिप व रिसर्चर :

अगर आप आर्ट्स स्ट्रीम की पढ़ाई के बाद टीचरशिप की ओर आगे बढ़ना चाहते है तो बी.ए— या डी.एड. की पढ़ाई करनी होगी। इसके बाद टीईटी की परीक्षा पास करके आप राज्य स्तर पर स्कूल शिक्षा विभाग के स्कूलों या निजी संस्थाओं में टीचिंग कर सकते है। यदि आप प्रोफेसर बनने की सोच रहे है तो आपको हायर एजुकेशन की तरफ जाना होगा। आपकी विषय विशेषज्ञ यानी एम.ए. की पढ़ाई करनी होगी इसके बाद एम.फिल फिर पी.एच.डी. कर सकते है, इसके अलावा आप एम.ए. के बाद एन.ई.टी/जे.आर.एफ या एस.ई.टी. की तैयारी भी कर सकते है। इस परीक्षा के बाद आप जुनियर रिसर्चर हो सकते है साथ ही इसे पास करने के बाद आप सहायक प्राध्यापक पद के लिए योग्य हो जाते है।

आर्ट्स की पढ़ाई के बाद – आगे खुला आसमान...

1. मैकेनिकल – इस लाईन में आर्ट्स के विद्यार्थी के लिए ढेरों विकल्प मौजूद है। जैसे – एयरफोर्स ऑफिस्र, आर्मी ऑफिसर, ऑटोमोटिव, डिजाइनर, कैमरामैन, फोटोग्राफर इत्यादि।

2. बिजनेस –

अगर बिजनेस के दाँव–पेंच में मजा आता है तो भी आर्ट्स के विद्यार्थी के पास विकल्पों की कमी नहीं। जैसे हॉस्पीटल हेल्थ मैनेजर, एडवरटाइजिंग, एग्जीक्यूटिव, एरोबिक इंस्ट्रक्चर, ऑक्शनर, बैंकर बिजनेस मैनेजर, कैटेगरी मैनेजर इत्यादि।

3. साइंटिफिक –

इस लाइन में भी संभावनाएं अपार है जैसे – आर्कियोलॉजिस्ट, क्यूरेटर, एथ्रोपोलोजिस्ट, कार्टोग्राफर, साइकोलॉजिस्ट डिटेक्टिव, गेम डेवलेपर इत्यादि।

4. एस्थेटिक –

बेहद ही कुछ कलात्मक करना चाहते है तो आपके पास इस फील्ड में ढ़ेरों विकल्प है जैसे – अर्बन प्लानर, अभिनय, एनिमेशन, ऑटोमोटिव डिजाइनर, ब्यूटीशियन, कार्टूनिस्ट, सेरेमिक आर्टिस्ट, कोरियोग्राफर, कर्मशियल आर्टिस्ट, फिल्म टेलीविजन प्रोडयूसर इत्यादि।

5. सोशल –

सामाजिक स्तर पर कुछ करना चाहते है तो कैरियर के ढ़ेरो विकल्प मौजूद है जैसे भारतीय प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा, सोशल वर्कर, थेरेपिस्ट, एयर होस्टेस, बॉडीगार्ड, कैरियर काऊंसलर, शेफ, क्रिमिनोलॉजिस्ट पत्रकार इत्यादि।

''जब तक जीना तब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।''

पिंजरे का जीवन

मनुष्य हो या पशु बंधन किसी को पसन्द नहीं। मनुष्य अपने स्वार्थ साधन, सेवा और मनोरंजन के लिए पशु पक्षियों को पालता है, वे विवशता में बंधन मे बंधते है। इस कविता में बंदी तोते को सुखी जानकर एक मैना स्वंय इसके स्थान पर बंध जाती है और तोते को स्वतंत्र कर देती है, लेकिन बाद में वह पिंजरे के जीवन से दुखी होती है।

पिंजरें के तोते से बोली
छत पर बैठी मैना।
बड़े मजे से तुम रहती हो
बोलो ये सच है ना ?
बैठे–बैठे मिल जाते है
भांति–भांति के व्यंजन।
काश! मुझे भी मिल पाता
जो इस पिंजरे का जीवन।
भोजन और जल की जलाश में
हम दिन–रात भटकते।
तब जाकर दो–चार अन्न कण
अपने पल्ले पड़ते।।
इस पर हरदम चिड़ीमार का
डर रहता है मन में।
हिंसक जीव–जन्तुओं का
भीषण खतरा है वन में।
तोता बोला अगर सोचती
हो सुख है पिंजरे में,
मुझें निकालो, आओं अन्दर
मैं जाता हूं वन में।
तुम ले लो पिंजरे का सुख
मैं लू जंगल की पीड़ा।
बड़े मजे से रहना इसमें
करना निशि दिन क्रीड़ा।
मैना ने खोला दरवाजा
जैसे ही पल छीन में।
मैना को अंदर कर तोता
खुद उड़ गया गगन में।।
चार दिनों में ही वह मैना
अंदर तड़प रही थी।
उड़ने की आकाश मे ऊँचे
तबीयत फड़क रही थी।

मेरी अभिलाषा है...

छोटू राम यादव
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

इस कविता मे एक बच्चे ने अपने मन की इच्छा प्रकट की है। वह सूरज चाँद तारों जैसा चमकना चाहता है और फूलों जैसा महकना चाहता है । वह आकाश के समान निर्मल पृथ्वी के समान सहनशील और पर्वत के सामान दृढ़ बनना चाहता है।

सूरज सा चमकूँ मैं,
चंदा सा चमकूँ मैं,
जगमग जगमग उज्जवल,
तारो सा चमकूँ मैं,
मेरी अभिलाषा हैं...

नभ से निर्मलता लूँ
शशि से शीतलता लूँ,
धरती से सहनशक्ति,
पर्वत से दृढ़ता लूँ
मेरी अभिलाषा है।

फूलों सा महकूँ मैं,
विंहगो सा चहकूँ मैं,
गुंजित सा बन उपवन
कोयल सा कुहकूँ मैं
मेरी अभिलाषा है ...

मेघों सा मिट जाऊँ,
सागर सा लहराऊँ,
सेवा के पथ पर मैं
सुमनो सा बिछ जाऊँ,
मेरी अभिलाषा है...

सावन आगे

बरसा के चार महीना म बारो महीना के हाँसी–खुशी ह लुकाय हे।
एकरे सेती चंद्रमास के महत्तम जादा हे।
चंद्रमास के चार महीना म सावन ह सबले सुग्घर महीना होथे।
कविता म सावन के चार ठन दृश्य हे।

बादर ऊपर बादर छागे, चल भइया, अब सावन आगे।।
अब तरसे मन हा नइ तरसे, रिमझिम रिमझिम पानी बरसे,
अइसे लगथे अब किसान ला जइसे दाई थारी परसे।

सब किसान के खुसी बुतागे, अलकरहा बिजली जब बरथे,
घुडुर–घुडुर तब बादर करथे,बछरू दँउड़े पुँछी टाँगके,
मनखे ऊपर ठाँड अभरथे इंदर ह जस गोली दागे।

दँउड़े लागिन माढ़े नरवा, चूहय लागिन छानी परवा
कती कती के काम ला देखे, हवय जे मनखे ह एकसरूवा
पल्ला मार के ढ़ोडगी भागे। बादर आँसो नइ हे लबरा,
भरगे भइया खोचका–डबरा, देखव डोली भरे लबालब,

भुईया ह हरियागे जबरा, नवा नवेरनित दुलहिन लागे।
बादर ऊपर बादर छागे, चल भइया, अब सावन आगे।।

समय का नियम

प्रकृति का प्रत्येक कार्य एक निश्चित वक्त पर होता है। वक्त पर ग्रीष्म तपता है, बक्त पर पानी बरसता है, वक्त पर शीत आता है, वक्त पर ही शिशिर होता है और वक्त पर ही बसंत आकर वनस्पतियों को फूलों से सजा देता है। प्रकृति के इस ऋतु–क्रम मे जरा सा भी व्यवधान पड़ जाने से न जाने कितने प्रकार के रोगों एवं इति–भीत का प्रकोप हो जाता है। चाँद–सूरज, ग्रह–नक्षत्र सब समय पर ही उदय–अस्त होते रहते है वक्त के अनुसार ही अपनी परिधि एवं अक्षर में परिभ्रमण किया करते हैं। इनकी समय में जरा सा व्यवधान पड़ने से सृष्टि में अनेक उपद्रव खड़े हो जाते है और प्रलय कि दृश्य दिखने लगते है।

मनुष्य कितना ही परिश्रमी क्यों न हो यदि वह अपने परिश्रम के साथ ठीक समय का उपयोग नहीं करेगा तो निश्चय ही उसका श्रम या तो निष्फल चला जाएगा अथवा अपेक्षित फल न पा सकेगा। किसान परिश्रमी है, किंतु यदि वह अपने परिश्रम को समय पर काम में नहीं लाता तो वह अपने परिश्रम का पूरा लाभ नहीं उठा सकता। वक्त पर न जोतकर असमय पर जोता खेत अपनी उर्वरता कोप्रकट नहीं कर पाता है। असमय बोया हुआ बीज बेकार चला जाता है, वक्त पर न काटी गई फसल नष्ट हो जाती है । संसार में प्रत्येक काम के लिए निश्चित वक्त पर न किया गया काम कितना भी परिश्रम करने पर भी सफल नहीं होता है।

मुझें यह लगता है कि समय की सभी चीजों को परिपक्व कर देती है समय के साथ सभी चीजे उजागर हो जाती है । समय सबके प्रेरणास्त्रोत है। समय पर कार्य सफलता का सोपान है।

अब्राहम लिंकन जब प्रातः काल टहलने जाते तो लोग अपनी घड़ियाँ मिला लेते थे कि समय क्या है। उनका समय नियम और क्रम पूर्णतया व्यवस्थित था। घड़ियाँ सभी के पास होती है पर उनसे समय पर उठने और काम करने की समुचित प्रेरणा किसी किसी को ही मिलती है, पर मनुष्य के भीतर एक ऐसा स्वसंचालित क्रोमोमीटर है कि यदि उसे थोड़ा सजीव और सक्रिय बना लिया जाए तो न केवल सही समय बता देता है वरन् ठीक समय पर निर्धारित कार्य करने के लिए भी बाध्य कर देता हैं।

अन्य जीव जंतु तो इसी आंतरिक घड़ी के आधार पर अपनी गतिविधियां चलाते है। मुर्गा आमतौर से लगभग प्रातः 4 बजे आवाज देता है। उसके पास मशीनी अलार्म घड़ी भले ही न हो पर भीतर वह मौजूद है। मुर्गे का आंतरिक क्रोमोमीटर समय की जानकारी उसे करा देता है और बांग लगाने की ड्यूटी पूरी करने के लिए विवश कर देता है।

पालतू तोते या कुत्ते को यदि कुछ दिनों नियत समय पर भोजन दिया जाए तो वहअभ्यस्त हो जाएंगें और यदि किसी दिन समय पर भोजन न मिले तो अपनी मांग प्रस्तुत करते हुए चिल्लाने या उछल–कूद करने लग जाएँगे।

घनघोर घटाएँ छाई रहने पर भी पक्षी प्रातःकाल होते ही चहचहाने लगते हैं और सूर्य अस्त होने के समय आते ही अपने घोंसले में चले आते है। जंगलों में सियारों के चिल्लाने का एक नियम निर्धारित समय होता है वे हर रात को उसी समय बोलते हैं।

दैनिक घड़ी ही नही ऋतुओं और महीनों की स्थिति भी भीतर अलार्म टाइमपीस निर्धारित कर उत्साह उत्पन्न करने और नियत काम पर लगने की प्रेरणा करती है। पालतु पशुओं की बात अलग है, जिन्हें उनके मालिकों ने अपनी प्रकृति के विपरीत कार्य करने के लिए बाध्य किया है। पक्षियों को घोंसले बनाने मे, मकड़ी को जाला तानने में एक नियत अवधि या नियत समय का उपयोग करते देखा जा सकता है।

<u>समय का सदुपयोग</u>

जीवन का महल समय के घंटे मिनटों की ईंटो से चुना गया है। यदि हमें जीवन से प्रेम है तो यही उचित है कि समय को व्यर्थ नष्ट न करें। मरते समय एक विचारशील व्यक्ति ने अपने जीवन के व्यर्थ ही चले जाने पर अफसोस प्रकट करते हुए कहा था–''मैंने समय को नष्ट किया, अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।'' खोई दौलत फिर कमाई जा सकती है भूली हुई विद्या फिर याद की जा सकती है। खोया स्वास्थ्य चिकित्सा द्वारा लौआया जा सकता है, पर खोया हुआ समय किसी प्रकार नहीं लौट सकता, उसके लिए केवल पश्चाताप ही शेष रह जाता है।

जिस प्रकार धन के बदले में अभीष्ट वस्तुएँ खरीदी जा सकती है, उसी प्रकार समय के बदले में भी विद्या, बुद्धि, लक्ष्मी, कीर्ति, आरोग्य, सुख शांति मुक्ति आदि जो भी वस्तु रूचिकर हो खरीदी जा सकती है। ईश्वर ने समय रूपी प्रचुर धन देकर मनुष्य को पृथ्वी पर भेजा है और निर्देश दिया है कि इसके बदले मे संसार की जो वस्तु अच्छा लगे उसे खरीद लें।

Time is money यानी समय पैसा है

समय दुनिया का सबसे बड़ा धन है जो समय का मूल्य समझते और उसका सदुपयोग करते हैं। अधिकांश लोग आलस्य और प्रमाद में पड़े हुए जीवन के बहुमूल्य क्षणों को यो ही बर्बाद करते रहते हैं। एक–एक दिन करके सारी आयु व्यतीत हो जाती है और अंतिम समय ने देखते है कि उन्होंने कुछ भी प्राप्त नहीं किया, जिंदगी के दिनों को यों ही बिता दिए। समय का नाम ही जीवन है, वे एक–एक क्षण कीमती मोती की तरह खर्च करते है और बदले मे बहुत कुछ प्राप्त कर लेते है। हर बुद्धिमान व्यक्ति ने बुद्धिमता का सबसे बड़ा परिचय यही दिया है कि उसने जीवन के क्षणों को व्यर्थ बर्बाद नहीं होने दिया।

यह याद रखने की बात है कि – ''परमात्मा एक समय में एक ही क्षण हमें देता है और दूसरा क्षण देने से पूर्व उस पहले वाले क्षण को छीन लेता है। यदि वर्तमान काल में उपलब्ध क्षणों का हम सदुपयोग नहीं करते तो वे एक–एक करके छिनते चले जाएंगे, अंत मे खाली हाथ ही रहना पडेगा।''

सुनते है कि मनुष्य की सांसे गिनती हुई हैं एक श्वास के साथ जीवन की इस अमूल्य निधि की एक इकाई कम हो गई। एक–एक करके इकाइयां कम होती जाएं तो जीवन की पूँजी एक दिन चुक जाती है। उस समय मृत्यु दूत बनकर लेने आ जाती है उसके साथ जाते–जाते व्यक्ति पीछे मुड़कर देखता है तो उसे ज्ञात हो जाता है कि उसने कितनी बेदर्दी से समय को गंवाया है या उसके एक एक पल का सदुपयोग किया है। तन से, मन से, बूढे न हो जाएँ तो गिनी हुई सांसो के इस जीवन में बहुत काम कर सकते हैं। इस निर्दयता से खरच कर देने पर बुढ़ापा अपनी कमजोर टाँगो व धुँधली आँखों से हमारा स्वागत करता है तब हम चौक पड़ते है, निराश हो जाते है और चिंताओं के सागर मे डूब जाते है। भला जब यौवनकाल मे कुछ न कर पाए तो अब क्या कर सकते है यह निराशा ही ले डुबती है।

''सच्चा व्यापारी तो वह होता है, जो घाटा होने पर भी व्यापार बंद नही करता, धर्य तथा बुद्धिमत्ता से पुनः अपने उखड़े पाँव जमा लेता है। दो तिहाई जीवन बीत गया तो क्या हुआ–एक तिहाई तो बचा हुआ है, उसमें भी बहुत कुछ काम किया जा सकता हैं।''

समय जरा भी बर्बाद मत होने दीजिए –

संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जिसकी प्राप्ति मनुष्य के लिए असंभव हो प्रयत्न और पुरूषार्थ से सभी कुछ पाया जा सकता है लेकिन एक ऐसी भी चीज है जिसे एक बार खोने के बाद कभी नहीं पाया जा सकता और वह है–समय। एक बार हाथ से निकला हुआ समय कभी हाथ नहीं आता। कहावत है – '' बीता हुआ समय और कहे गये शब्द कभी वापस नहीं बुलाए जा सकते''। इसलिए समय और शब्द दोनों का उपयोग लापरवाही से ना करें क्योंकि ये दोनों ना दुबारा आते है न मौका देते हैं।

समय ही जीवन की परिभाषा है, क्योंकि समय से ही जीवन बनता है। समय का सदुपयोग करना जीवन का उपयोग करना है, समय का दुरूपयोग करना जीवन को नष्ट करना है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, वह प्रतिक्षण, घंटे, दिन, महीनों, वर्षो के रूप में निरंतर अज्ञात दिशा को जाकर विलीन होता है। समय की गति निरंतर प्रवाहित होती रहती है और फिर शून्य में विलीन हो जाती है। फ्रेंकलिन ने कहा–''समय बरबाद मत करो, क्योंकि समय से ही जीवन बना है। निःसंदेह वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करती। हमारा कर्तव्य है कि हम समय का पूरा–पूरा सदुपयोग करें।

समय की बरबादी का सबसे पहला लक्षण है किसी काम को आगे के टाल देना। आज नहीं कल करेंगे इस कल के बहाने हमारा बहुत सा नष्ट हो जाता है।

स्वेट मार्डेन ने लिखा है– ''इतिहास के पृष्ठों में कल की धारा पर कितने प्रतिभावानों का गला कट गया, कितनों की योजनाएँ अधूरी रह गई, कितनों के निश्चय बस यों ही रह गए कितने पछताते, हाथ मलते रह गए। कल असमर्थता और आलस्य का द्योतक है।''

इस कल से बचने के लिए महात्मा कबीर ने चेतावनी देते हुए कहा है।

काल करें सो आज कर, आज करै सो अब।
पल मे परलै होइगी, बहुरि करेगा कब।।

कल पर अपने काम न टाले। जिन्हें आज करना है उन्हें आज ही पूरा कर लें याद रखिए प्रत्येक काम का अपना अवसर होता है। जब वह काम आपके सामने पड़ा है। अवसर निकल जाने पर काम का महत्व ही समाप्त हो जाता है और बोझ भी बढ़ता जाता है। ''बहुत से लोगों ने अपना काम कल पर छोड़ा है और वे संसार में पीछे रह गए, अन्य लोगों द्वारा प्रतिद्वंद्विता मे हरा दिए गए। जो काम स्वंय करता है उसे स्वंय ही पूरा करें। अपना काम दूसरों पर छोड़ना भी एक तरह से दूसरे दिन काम टालने के समान ही है ऐसे व्यक्ति का अवसर ही निकल जाता है और उसका काम पूरा नहीं होता है।

कार्ब सैडंबर्ग – ''समय आपके जीवन का एक सिक्का है आपके पास बस यही एक सिक्का है और आप ही तय कर सकते है कि इसे कैसे खर्च करना है सावधान रहो नहीं तो आपके लिए और लोग इसे खर्च कर देंगे।

दुर्गा यादव
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

विद्या की देवी माँ सरस्वती (सरस्वती पूजा)

राजेश्वरी धुर्वे
बी.ए. तृतीय वर्ष

विद्या की देवी माँ सरस्वती को कौन विद्यार्थी नहीं जानते वो तो नीर–क्षीर विवेकी श्वेत हंस पर श्वेत वस्त्रों में हाथ में वीणा लिए सरस्वती जी का चित्र विद्यार्थियों की कापी, किताब या जहां ज्ञान की बातें होती है,वहां माँ सरस्वती साक्षात निवास करती है।

सरस्वती पूजा का पर्व भारत, बिहार और पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में यह पर्व बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाया जाता है। फरवरी या मार्च महीने में बसंत पंचमी के दिन सभी बड़े उत्साह में सरस्वती पूजन का आयोजन करते है।

इस समय प्रकृति भी विशेष कृपा करती है। अमलतास के पीले–पीले फूल, लाल पलाश के फूलों से लदे पेड़, मीठी मंद पवन सभी माना सरस्वती पूजा का आयोजन करते है।

बिहार और पश्चिम बंगाल में इस समय अवकाश रहता है। सरस्वती पूजा के एक महीने पूर्व देवी सरस्वती की मूर्तियां बनने लगती है, लोग अपनी पसंद से छोटी–बड़ी मूर्तिया बनवाते है, खरीदते है । विद्यार्थी, घर, कॉलेज, स्कूल में इसको स्थापित करते हैं। सरस्वती पूजा के दिन विशेष कर विद्यार्थीयों का उत्साह बढ़ जाता है। छात्र–छात्राएं सुबह नहा धोकर सामूहिक सरस्वती पूजा करते है, स्कूल कॉलेज में।

फलो का प्रसाद बांटते है, विद्यार्थी सरस्वती जी की मूर्ति के चरणों में अपनी पुस्तके रखते है। अपनी किताबो की आलमारी को साफ करते है ताकि माँ सरस्वती उसमें वास करें अगले दिन इसका विसर्जन किया जाता है। नदी–तालाब में छात्रगण अपने मन में सरस्वती जी के प्रति श्रद्धा रखते हुए, अपने विद्या ग्रहण के कार्यो में लग जाते है।

हमारे देश में आज भी लाखों गरीब है जो शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे। यदि हम जो लाखो शिक्षित है अगर एक–एक अशिक्षित को पढ़ा सकें तो शिक्षा का उजाला सर्वत्र फेल जायेगा। निरक्षरता दूर हो जायेगी। यदि हम अपने देश के लिए छोटे–छोटे कार्य करके हम देश की उन्नति और प्रगति में सहायक बन सकते है। जिस देश में हमने जन्म लिया है जो देश हमारा पोषक है, जहाँ हमें अपना पूरा जीवन व्यतीत करना है तो उस देश के लिए इतना तो कर ही सकते है।

अपने देश के प्रति हमारा कर्तव्य

किसी भी देश का निर्माण उसके देशवासियों से ही होता है। कोई भी स्थान या प्रदेश केवल भूमि, जल और वायु से नहीं बनता बल्कि किसी विशिष्ट स्थान पर रहने वाले लोगों की समान राष्ट्रीय भावना देश का निर्माण करती है। '' देश के प्रति हमारे कुछ कर्तव्य है जिन्हें पूरा करना हमारा राष्ट्रीय धर्म है। हम एक सच्चे नागरिक के रूप में देश का भविष्य उज्जवल बना सकते है।

यदि भारत का प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो जाये तो हम अपने हम अपने देश का स्तर निश्चय ही सुधार कर सकते है। अपने लगन और मेहनत से ही हमारे पूर्वजों ने देश की परतंत्रता की बेड़ी से आजाद कराया और इस मुकाम तक पहुँचाया, के हम आज खुली हवा में सांस ले रहे है।

एक आदर्श नागरिक वो होता है, जो अपने देश को प्रगति, विकास, सुख–शांति एवं देश के निर्माण और सम्पन्नता के प्रति सजग करे। इसके लिए हमें अपननी पूर्णतया जिम्मेदारी का ज्ञान होनी चाहिए। हमारा देश अनेक ब्राह्य, आंतरिक और सामाजिक समस्या से जूझ रहा है। इन समस्याओं पर गौर करे, और सरकार के साथ इनका समाधान ढूंढ़ने में प्रयास करें।

''हमारा कर्तव्य है कि हम स्वावलंबी बने। आज हमारा देश बेरोजगारी की बढ़ती हुई समस्या से अक्रांत है। अब हमारी जिम्मेदारी यह है कि हम ऐसे रोजगार अपनाएं जो हमें आत्मनिर्भर बनाएं फिर चाहे वो कृषि हो या लघु उद्योग। आज ऐसे पढ़े लिखे नौजवान है, जो अच्छी सरकारी नौकरी पाने की उम्मीद में अपना समय व्यर्थ गवां रहे है। जब उन्हें उचित नौकरी नहीं मिलती तो वो सरकार को ही दोषी ठहराता है इतना ही नहीं अधिक पैसे के लालच में बुरी संगति में पड़कर वे चोरी, डकैती, स्मगलिंग जैसे धंधे अपनाते हैं और देश की संपत्ति और शांति को हानि पहुँचाते है। जिस प्रकार हमारे देश की आबादी बढ़ रही है उसके हिसाब से सरकारी नौकरियां उपलब्ध नहीं है। अतः स्वावलंबन आत्म निर्भरता की इस समस्या का सामाधान है।

देश के प्रति हमारा यह भी कर्तव्य है कि देश को स्वच्छ एवं सुंदर बनाएं। अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखे। ऐसा करने के लिए जागरूक्ता की आवश्यकता है। अपने घर का कूड़ा सड़क पर ना रखें, गली मोहल्ले को साफ रखें, वाहनों की उचित प्रयोग करे जरूरत तक ही।

राजेश्वरी धुर्वे
बी.ए. तृतीय वर्ष

ओणम पर्व

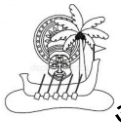

ओणम दक्षिण भारत का प्रमुख त्यौहार है। यह केरल प्रदेश में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। ओणम का त्यौहार श्रावण मास में पूरे दस दिनों तक जोश और उल्लास के साथ मनाया जाता है। ओणम हंसी–खुशी, प्रेम और भाईचारे का त्यौहार है।

ओणम त्यौहार के पीछे पौराणिक कथा जुड़ी हुई है। प्राचीन काल में राजा बलि नामक एक अत्यंत दानी सम्राट थे। उनकी दानप्रियता की धूम दुनिया भर में थी। राजा बलि के प्रसिद्धि सुनकर देवताओं के राजा इन्द्र को अपना स्वर्ग का सिंहासन डोलता नजर आ रहा था। फिर इन्द्र ने भगवान विष्णु से सहायता मांगा। फिर भगवान विष्णु ने ब्राम्हण का रूप (वामन अवतार) धारण कर राजा बलि की परीक्षा लेने के लिए आये उन्होंने राजा बलि से तीन पग भूमि मांगा। भगवान विष्णु ने अपने विराट रूप से एक पग में पूरी धरती व दूसरे पग में पूरा आकाश को नाप लिया। राजा बलि ने तीसरा पग अपने सिर पर रखने को कहा फिर भी भगवान विष्णु ने बलि की दानप्रियता को देखकर अति प्रसन्न हुए और वरदान मांगने के लिए कहा राजा बलि ने भगवान का हमेशा दर्शन करूं। वरदान में यही मांगा।

राजा बलि को भगवान विष्णु पाताल लोक ले गये पाताल पहुंचकर राजा बलि ने भगवान विष्णु को यह प्रार्थना किया की वो एक दिन अपने प्रजा के खुशहाली को जानने का अवसर दे। इस पौराणिक कथा के अनुसार केरल के निवासियों का यह विश्वास के राजा बलि प्रजा से मिलने ओणम के पर्व में मिलने आते है।

ओणम के उत्सव में केरल वासी धरा के आँगन को रंगोली से सजाते है नए–नए परिधान पहनकर एक–दूसरे को भेंट देते है, लड़कियाँ व महिलाएं बालों में फूलों के गजरे लगाते है। सामूहिक नृत्य करती है,राजा बलि के स्वागत में गीत गाती है। मित्रों रिश्तेदारों को भोज करवाया जाता है।

नारियल, केले और चावल के विविध स्वादिष्ट व्यंजन बनाए जाते है जिसमें पायसम विशिष्ट उल्लेखनीय है। ओणम के पूरे अवसर में केरल में नौका दौड़ किया जाता है लोग नौकाओं पर रंग–बिरंगे कागजों में झंड़ियो से सजाये जाते है। नदी किनारे सजी नौकाएं आकर्षक लगती है।

यह दौड़ अति रोमांचक होता है इस प्रकार खुशी मनाकर यहां की प्रजा राजा बलि को विश्वास दिलाते है कि हम अति प्रसन्न खुशहाल है। ओणम का त्यौहार पूरे दस दिनों तक चलता है जगह–जगह पर मेलों का आयोजन हाट–बाजार आदि की उमंगे दिखाई देते है। ओणम त्यौहार के माध्यम से भाई चारे का परिचय देते है और दस दिन कैसे बीत जाते है ओणम त्यौहार का पता ही नहीं चलता।

छत्तीसगढ़ी दोहा

का होगे के रात हे, घपटे हे अंधियार ।
आशा अऊ बिसवास के चल तै दीया बार।
एक अवगुन सौ गुन ल, मिरखि मारत खाएं।
गुरतुर गुन वाला सुवा, लोभ करे फंद जाये।।

मीठ लबारी बोल के लबरा पाये मान,
पर सतवंता सत खातिर हासंत तजे परान।

घाम छांव के खेल तो होवत रहिथे रोज।
ऐकर संसो छोड के रद्दा नवा तैं खोज।

सबला देथे फुल–फर, सबला देथे छांव
अइसन दानी पेड़ के, परो निहर के पांव।

तै किताब के संग कर गंगा बारू मीत ।
ऐकरे बल मा दुनिया ला पक्का लेबे जीत ।।
ठाढे – ठाढे नई मिलय ठिहा ठिकाना सार ।
समुंद कोत नदिया चले दउड़न पल्ला मार ।।

हे उत्साह मन म कहुँ पाय बर कुछु ज्ञान ।
का मनखे ? चांटी घलो पाही गुरू के ज्ञान।।

अकेली माँ की वेदना

महीने बीत जाते है,
साल गुजर जाते है
आंगन मे बैठे मैं तेरी राह देख ती हुँ।

आंचल भीग जाता है,
मन खाली–खाली रहता है,
तु कभी नहीं आता
तेरी मनि ऑर्डर आता है।

इस बार पैसे न भेज,
तु खुद आ जा बेटा
मुझे अपने साथ
अपने घर ले कर जा।

तेरे पापा थे तब तक
समय ठीक रहा कटते
खुली आंखें से चले गये
तुझे याद करते – करते।

अन्त तक तुझको हर दिन
बढ़िया बेटा केहते थे
तेरे साहब पन का
गुमान बहुत करते थे।

मेरे हृदय में अपनी फोटो
तु देते जा बेटा
मुझे अपने साथ
अपने घर ले जा...।

संदीप कुमार
बी.ए. तृतीय वर्ष

सफलता....

सफलता प्राप्त करने हेतु सकरात्मक सोच एवं आत्मविश्वास का होना अत्यंत आवश्यक है। हमें अपने ऊपर पूरा विश्वास होना चाहिए कि जो कार्य हम कर रहे हैं। वह सही दिशा में हो इसके साथ ही समय का प्रबंधन भी ठीक प्रकार से होना चाहिए। एक योजना के तहत् काम करना बहुत जरूरी है।

यदि टीवी देखने बैठ गये या दोस्तों के साथ गप–शप कर लिया और अपने लक्ष्य को कुछ समय के लिए छोड़ दिया। हमने सोचा बचा हुआ कार्य कल कर लेगें। यह प्रवृत्ति आगे बढ़ती जाती है और हम अपने लक्ष्य से पिछड़ते जाते हैं।

परिश्रम या मेहनत करते पूरी ईमानदारी से कार्यो को क्रियान्वित किया जाना चाहिए, हर दिन कुछ नया करने को प्रेरित होना चाहिए। अपने अंदर लगातार इम्प्रुवमेंट करना ही सफल व्यक्तित्व की पहचान है।

अपने लक्ष्य का निर्धारण करते समय एक समय में एक ही कार्य करना बेहतर होता है इस संदर्भ में डॉ. हरिवंशराय बच्चन की निम्न पंक्तियां कारगार हैं ।–

''मदिरालय जाने के लिए घर से चलता है पीने वाला,
किस पथ रूक जाऊँ, असमंजस में है वह भोलाभाला।
अलग–अलग पथ बतलाते सब पर मैं ये बतलाल हूँ।
राह पकड़ तू एक चलाचल पा जाएगा मधुशाला।''

इस बात को ख्याल रखना अति आवश्यक है कि जो भी कार्य हम कर रहे है , उसमें हमारी रूचि होनी चाहिए, अपने पसंद का कार्य चुनने से हम तनावमुक्त होते है। दबाव कम रहता है और काम को मस्ती के साथ करते है।

''कामयाबी किताबों को रटने से नहीं, अपने हुनर को समझने से मिलती है।

मंजिल पर पहुँचने से पहले का रास्ता थकाने और हिम्मत तोड़ने वाला होता है, ऐसे में कोई भी हारकर बैठ सकता है लेकिन जो अपने जज्बे को बनाए रखते है वे बाद में किस्मत के धनी कहलाते हैं।

सोनू साहू
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

श्वेता पाटस्कर
बी.कॉम. तृतीय वर्ष

एक बचपन का जमाना था

एक बचपन का जमाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी
पर दिल तितली का दिवाना था
खबर ना थी कुछ सुबह की
ना शाम का ठिकाना था
थक कर आना स्कूल से
पर खेलने भी जाना था
माँ की कहानी थी
परीयों का फसाना था
बारिश में कागज की नाव थी
हर मौसम सुहाना था
रोने की वजह ना थी
ना हँसने का बहाना था
क्यूँ हो गये हम इतने बड़े
इससे अच्छा तो वो बचपन का जमाना था

तुम चलो तो सही

राह में मुश्किल होगी हजार
तुम दो कदम बढ़ाओं तो सही
हो जायेगा हर सपना सकार
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही,
मुश्किल है पर इतना भी नहीं
कि तू कर ना सके
दूर मंजिल है पर इतना भी नहीं
कि तू कर ना सके
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही,
एक दिन तुम्हारा भी नाम हो
तुम्हारा भी सत्कार होगा
तुम कुछ लिखो तो सही
तुम कुछ आगे पढ़ो तो सही
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही,
सपनों के सागर में कब तक गोते लगाते रहोगें
तुम एक राह को, चुनो तो सही
तुम उठो तो सही, तुम कुछ करो तो सही
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही,
कुछ ना मिले तो कुछ सीख जाओगे
जिन्दगी का अनुभव साथ ले जाओगे
गिरते पड़ते संभल जाओगे
फिर एक बार तुम जीत जाओगे
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही,

हमर कतका सुन्दर गाँव

हमर कतका सुन्दर गाँव,
जइसे लक्ष्मि जी के पाँव,
घर उज्जर लीपे पोते,
जेला देख हवेली रोथे,
सुध्धर चिकनाये भुइयाँ,
चाहे भगत परूस ल गूइयाँ,
अंगना मा बइला, गरूवा,
लकठा में कोला बारी,
जंह बोथन साग तरकारी,
ये हर अनपूरना के ठाँव,
हमर कतका सुन्दर गाँव।

आकाश गुप्ता
एम.ए. हिन्दी साहित्य (अंतिम)

"तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन तुम्हारे निगेटिव विचार है।"

मुश्किल नहीं है कुछ दुनिया में, तू जरा हिम्मत तो कर,
ख्वाब बदलेंगे हकीकत में, तू जरा कोशिश तो कर।
तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन तुम्हें उतना नुकसान नहीं,
पहुँचा सकता है, जितना की तुम्हारे निगेटिव विचार।
दुनिया में जितनी भी अच्छी बातें कही जा चुकी हैं,
बस उन पर अमल करना बाकी रह गया है।
समझदार इंसान का दिमाग ज्यादा चलता है,
और मुर्ख व्यक्ति की जुबान।

छत्तुराम वर्मा
बी.ए. अंतिम वर्ष